अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

कटनी शहर में
आचार्यश्री
108 आर्जवसागर जी
का 5 वाँ
आचार्य पदारोहण
दिवस
सानन्द सम्पन्न।

वीर निर्वाण संवत् - 2545
चैत्र कृष्ण, वि.सं. 2075, मार्च 2019

अंक : सेंतालीस

वर्ष : तेरह

बाजना ग्राम में आचार्यश्री आर्जवसागरजी की पूजन करते हुए भक्तगण।

कटनी नगर के बड़े मंदिर में विराजमान आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

आचार्य पदारोहण दिवस पर आ.श्री आर्जवसागरजी की पूजन रचाते हुए कटनी नगर में भक्तगण।

आचार्य पदारोहण दिवस पर कटनी में आचार्यश्री आर्जवसागरजी की महाआरती करते हुए भक्तगण।

कटनी में भाव-विज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन करते हुए आर.के. जैन, पवन जैन-भोपाल एवं कोमलचंद जी कटनी आदि।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी विशेष पूजन करवाती हुईं आर्यिकाश्री प्रतिभामति माता जी एवं बहिनें।

कटनी में आ.श्री आर्जवसागरजी रचित पर्यूषण पीयूष पुस्तक की नवीन कृति का विमोचन करते हुए अध्यक्ष संतोष मालगुजारजी आदि

पवई नगर (पन्ना) में आ.श्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ पार्श्वनाथ विधान।

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-तेरह
अंक - सेंतालीस

• परामर्शदाता •
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएप: 9425601161
email : bhav.vigyan@gmail.com
• प्रबंध सम्पादक •
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357
• सम्पादक मंडल •
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
• कविता संकलन •
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल
• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा
सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो.: 7024373841
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्माननीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन (स्थायी) सदस्यता	:	1500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — पृष्ठ

1. आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप] – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज 2

2. सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र एवं नियमावली 18

3. पारसचन्द से बने आर्जवसागर – आर्यिकारत्नश्री प्रतिभामति माताजी 20

4. भारत की पूर्व स्थिति; -अभिमत जैनधर्म के संबंध में – श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री 31

5. समाचार 41

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

प्र. 201 तीर्थंकर ऋषभदेव राजन् ने दीक्षा पूर्व किन पारिवारिक लोगों से मोह का बंधन तोड़कर नग्न-दिगम्बरी-दीक्षा धारण की थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव राजन् ने प्रथम रानी नंदा (यशस्वती) तदोत्पन्न भरत आदिक शत पुत्र एवं ब्राह्मी पुत्री से तथा द्वितीय रानी सुनंदा तदोत्पन्न पुत्र बाहुबली और पुत्री सुन्दरी इन प्रमुख पारिवारिक लोगों से मोह का बंधन तोड़कर दिगम्बरी दीक्षा धारण की थी।

प्र. 202 तीर्थंकर ऋषभदेव की दीक्षा के समय उनका साथ न छोड़ते हुए कितने राजाओं ने दिगम्बरी-दीक्षा धारण की थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के साथ उनके राज्य में रहने वाले चार हजार राजाओं ने दिगम्बरी दीक्षा धारण कर ली थी।

प्र. 203 तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा-धारण के समय कितने दिनों तक लिए योग-धारण कर लिया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा-धारण करते ही छह माह तक का योग धारण कर लिया था।

प्र. 204 तीर्थंकर ऋषभदेव छह माह के योग-धारण के समय कौन-से कार्य में लीन हो गये थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव छह माह के योग-धारण के समय छह माह के ही उपवास का नियम ग्रहण कर एक ही पद्मासन में बैठकर प्रतिमायोग-धारण कर निजात्मतत्त्व के गुण चिन्तवन रूप प्रशस्त-शुभध्यान में लवलीन हो गये थे।

प्र. 205 तीर्थंकर ऋषभदेव के साथ दीक्षा-धारण करने वाले चार हजार मुनीश्वरों ने तीर्थंकर के मौनधारण पर किस तरह मुनि-क्रिया का अनुपालन किया?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के साथ दीक्षा-धारण करने वाले चार हजार मुनीश्वर तीर्थंकर के मौन-धारण पर उनके उपदेश के अभाव में मुनिचर्या का ज्ञान न हो सकने से तीर्थंकर के उपदेश की प्रतीक्षा करते हुए मन की शिथिलता के कारण भूख-प्यास की बाधा होने पर पेड़-पौधों के फलादिक एवं झरने का पानी सेवन कर और शीतादिक की बाधाओं में पेड़ों के पत्ते व छालादिक से तन को ढककर मनमानी चेष्टा के द्वारा सच्चे मार्ग से विमुख हो गये थे।

प्र. 206 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर सर्व प्रथम आहार चर्या को कब निकले एवं उन्हें किस तरह आहार का अलाभ हुआ?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर छह माह सम्बधी योग-धारण के उपवास के उपरान्त आहार-चर्या को

नगर की ओर निकले लेकिन किसी ने उनकी नवधाभक्ति नहीं की, दातागण मात्र आहार इत्यादिक सम्बन्धी भोगोपभोग की सामग्री ग्रहण करने का आग्रह करते रहे, इस तरह विधिवत् भक्ति के अभाव में अलाभ रूप अंतराय मानकर वे तीर्थंकर मुनीश्वर वन की ओर लौट आये और ध्यान योग में लीन हो गये।

प्र. 207 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए विधिवत्-नवधाभक्ति पूर्वक आहार का लाभ कितने दिनों के उपरान्त कब प्राप्त हुआ?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए विधिवत् नवधाभक्ति पूर्वक आहार एक वर्ष एक माह और नौ दिनों के बाद वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन प्राप्त हुआ।

प्र. 208 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए आहारचर्या को जाने में एक वर्ष एक माह और नौ दिनों का समय क्यों लगा था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा धारण करते ही सर्वप्रथम छह माह का उपवास-धारण किया तदुपरान्त उन्हें आहार अलाभ रूप अंतराय हुआ एवं उन्होंने प्रतिदिन आहार चर्या को न जाते हुए सात माह और नौ दिनों के लिए पुन: योग-धारण के साथ उपवास ग्रहण का नियम धारण कर लिया था।

प्र. 209 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर प्रथम छह माह के योग धारण व उपवास के उपरान्त प्रतिदिन आहार-चर्या को क्यों नहीं निकले?

उत्तर इसमें महत्त्वपूर्ण कारण यह कि सभी तीर्थंकर वर्द्धमान-चारित्र के धारक हुआ करते हैं, वे जो साधना पूर्व में कर चुकते हैं उससे आगे बढ़कर ही साधना या तपस्या किया करते हैं; कम नहीं। अत: तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर ने छह माह के उपवास के उपरान्त एक दिन की चर्या के समय नवधा भक्ति के ज्ञान के अभाव को देखकर अलाभ-अन्तराय मानकर हीयमान चारित्र रूप प्रतिदिन आहार-चर्या को न जाते हुए वर्द्धमान चारित्र के रूप में पुन: छह माह और नौ दिनों का योग धारण कर लिया था। यदि तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर छह माह के उपवास के बाद प्रतिदिन आहार को जाते तो वे वर्द्धमान-चारित्र वाले न कहलाकर हीयमान-चारित्र वाले कहलाते।

प्र. 210 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए प्रथम पारणा के रूप से आहार-दान किस श्रावक द्वारा अपने राजमहल में दिया गया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए प्रथम पारणा के रूप से आहार-दान राजा श्रेयांस द्वारा अपने परिवार के साथ अपने राजमहल में दिया गया था।

प्र. 211 किस नगर में राजा श्रेयांस द्वारा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) मुनीश्वर के लिए आहार दान दिया गया था?

उत्तर हस्तिनापुर नगरी में राजा श्रेयांस द्वारा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) मुनीश्वर के लिए आहार दान दिया गया था।

प्र. 212 राजा श्रेयांस ने अपने परिवार सहित कौन-सी वस्तु का आहार-दान तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर

के कर कमलों में देने का परम सौभाग्य प्राप्त किया था?

उत्तर राजा श्रेयांस ने अपने परिवार सहित इक्षु रस का आहार-दान तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के कर कमलों में प्रदान करने का परम सौभाग्य प्राप्त किया था।

प्र. 213 राजा श्रेयांस ने सहपरिवार किस तरह की नवधाभक्ति करके तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के समक्ष आहार-दान विधि सानंद सम्पन्न की थी?

उत्तर राजा श्रेयांस ने सहपरिवार 1. प्रतिग्रहण (पड़िगाहन), 2. उच्चासन, 3. पाद प्रक्षालन, 4. पूजन, 5. मनशुद्धि, 6. वचनशुद्धि, 7. कायशुद्धि, 8. आहार-जल शुद्धि और 9. नमोस्तु इस तरह की नवधाभक्ति मन-वचन-काय पूर्वक करते हुए तीर्थंकर ऋषभदेव के समक्ष आहार दान-विधि सानन्द सम्पन्न की थी।

प्र. 214 तीर्थंकर ऋभषभदेव जब प्रथम बार आहार-चर्या को निकले थे तब राजा श्रेयांस ने नवधाभक्ति रूप आहर की विधि सम्पन्न क्यों नहीं की थी?

उत्तर क्योंकि तब तक राजा श्रेयांस के लिए किन्हीं तीर्थंकर के तीर्थ अर्थात् दिव्यध्वनि रूप उपदेश के अभाव में नवधा-भक्ति करने के ज्ञान का अभाव था।

प्र. 215 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के दूसरी बार आहार-चर्या के लिए निकलने पर राजा श्रेयांस को कैसे नवधा-भक्ति का ज्ञान जागृत हुआ?

उत्तर राजा श्रेयांस ने अपने पूर्व के आठवे भव में चक्रवर्ती वज्रजंघ (वर्तमान भव-ऋषभदेव) की पत्नी श्रीमती (वर्तमान भव-राजा श्रेयांस) की पर्याय में दो मुनियों के लिए नवधाभक्ति पूर्वक आहार दिया था इस बात स्मरण उन राजा श्रेयांस के जातिस्मरण (पूर्व भव की स्मृति) द्वारा हो गया था। अत: उन्होंने नवधा-भक्तिपूर्वक तीर्थंकर ऋषभदेव की आहार विधि सम्पन्न की थी।

प्र. 216 राजा श्रेयांस के लिए ऐसे जातिस्मरण के होने में इतने अधिक दिन क्यों व्यतीत हुए; कुछ काल पूर्व ऐसा जातिस्मरण क्यों नहीं हुआ?

उत्तर क्योंकि इतने काल के पूर्व राजा श्रेयांस के दानान्तराय कर्म का एवं ऋषभदेव मुनीश्वर के लाभान्तराय कर्म का क्षयोपशम नहीं हुआ था।

प्र. 217 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के प्रथम आहार की सानन्द सम्पन्नता पर किस तरह देव-गणों ने उत्सव मनाया?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के प्रथमाहार की सानन्द सम्पन्नता पर बड़ी भक्ति-भाव पूर्वक पञ्चाश्चर्य करते हुए महा उत्सव मनाया।

प्र. 218 महामुनीश्वरों के आहार-दान के उपरान्त देवों द्वारा किये जाने वाले पञ्चाश्चर्य किस तरह सम्पन्न किये जाते हैं?

उत्तर जिस तरह तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए दिये आहार दानोपरान्त देवों ने आकाश से रत्नों की धारा पृथ्वी पर बरसाई थी, मंद-मंद सुगन्धित वायु बहाई थी, दिव्य पुष्पों की वृष्टि की थी, जय-जयकार

रूप शब्दों द्वारा उच्च स्वरों में उद्घोष किया था और देव दुन्दुभि-वाद्यों से मधुर ध्वनि कर भव्यों को परमानन्द में अवगाहित कर पञ्चाश्चर्यों को सम्पन्न किया था। उसी तरह सर्व ऋद्धि आदिक से विशिष्ट महामुनीश्वरों के आहारोपरान्त देवगण पञ्चाश्चर्य किया करते हैं।

प्र. 219 ऋद्धिधारक महामुनीश्वरों के लिए अर्पित किये गये आहारोपरान्त कम-से-कम और अधिक-से-अधिक कितने दिव्य (बेशकीमती) रत्नों की वर्षा देवों द्वारा की जाती है?

उत्तर ऋद्धिधारक महामुनीश्वरों के आहारोपरान्त देवों द्वारा कम-से-कम एक लाख पच्चीस हजार और अधिक-से अधिक साढ़े बारह करोड़ दिव्य रत्नों की वर्षा की जाती है। (त्रि.महा.)

प्र. 220 राजा श्रेयांस द्वारा दिये गये तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर को प्रथमाहार द्वारा चक्रवर्ती भरतेश्वर ने राजा श्रेयांस के लिए कौन-से तीन विशेषणों के साथ पुकारा था?

उत्तर चक्रवर्ती भरतेश्वर ने राजा श्रेयांस के लिए प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव महामुनीश्वर के लिए प्रदान किये गये प्रथमाहार के महानन्दोत्सव पर तुम महादानपति हो, तुम दानतीर्थकृत हो और तुम महापुण्यभाग हो ऐसे इन तीन विशेषणों के साथ पुकारा था। (म.पु.)

प्र. 221 प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव महामुनीश्वर के प्रथम आहार दान के शुभ दिन का नाम जगत् के भव्य बन्धुओं ने क्या घोषित किया था?

उत्तर ऐसे महान प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव महामुनीश्वर के प्रथमाहारदान के शुभ दिन का शुभ नाम जगत् के भव्य जनों ने अक्षय तृतीया उद्घोषित किया था।

प्र. 222 तीर्थंकरों के लिए दीक्षा-धारण करते ही कौन-कौन-सी ऋद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं?

उत्तर तीर्थंकरों के लिए दीक्षा-धारण करते ही 1. बुद्धि-ऋद्धि, 2. विक्रिया-ऋद्धि, 3. चारण-ऋद्धि, 4. तप-ऋद्धि, 5. बल-ऋद्धि, 6. औषध-ऋद्धि, 7. रस-ऋद्धि और 8. अक्षीण-ऋद्धि इस तरह मूल रूप से अष्ट ऋद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं।

प्र. 223 बुद्धि आदिक मूल अष्ट ऋद्धियों के उत्तर भेद कितने होते हैं?

उत्तर बुद्धि आदिक मूल अष्टऋद्धियों के उत्तर भेद आगम में चौसठ बतलाये गये हैं। (विशेष देखिये जै.सि.कोश)

प्र. 224 बुद्धि-ऋद्धि के अठारह भेदों में एक भेद केवलज्ञान भी आता है तो क्या वे तीर्थंकर मुनि-पद धारण करते ही केवलज्ञान रूप ऋद्धि के भी स्वामी बन जाते हैं?

उत्तर नहीं; ऐसा नहीं होता। इस जिज्ञासा का समाधान ऐसा है कि- तीर्थंकर जब मुनि-दीक्षा धारण करते हैं तब तत्काल ही उन्हें त्रेसठ ऋद्धियाँ अवश्य प्रकट हो जाती हैं लेकिन बुद्धि-ऋद्धि के अठारह भेदों में से एक केवलज्ञान ऋद्धि रूप भेद तब प्रकट होता है जब वे चार घातियाँ कर्मों का क्षयकर अरहंत-पद रूप अवस्था को प्राप्त करते हैं।

प्र. 225 ऋद्धि और विद्याओं को क्या परिग्रह नहीं कहा जा सकता? और इनके माध्यम से मुनिपद बाधित नहीं होता क्या?

उत्तर ऋद्धियों से मुनिपद बाधित नहीं होता और न ही वे परिग्रह रूप होती हैं क्योंकि वे तपस्या से प्राप्त आत्मिक शक्तियाँ हैं न कि कोई सेविकाएँ। विद्याओं से मुनिपद बाधित अवश्य होता है और उन्हें अपनाने से परिग्रह रूप पाप भी होता है क्योंकि वे सेविका (दासी) रूप हुआ करती हैं।

प्र. 226 बुद्धि-ऋद्धि के तेरहवें भेद दशपूर्वित्व में जो विद्यानुप्रवाद नामक पूर्व होता है उसके अध्ययन के काल में मुनियों के सम्यक्त्व व उनके निराकांक्षा रूप परिणामों के परीक्षण हेतु जो महारोहणी आदि पाँच सौ महा-विद्याएँ तथा अंगुष्ठ, प्रसेन आदि सात सौ लघु विद्याएँ उपस्थित होती हैं तब वे मुनि अपरिग्रही कैसे बने रहते हैं?

उत्तर जो वैरागी मुनि इन असंयमी देवी रूप विद्याओं की सेवा रूप प्रार्थना को अस्वीकार कर देते हैं वे सम्यक्त्व रूपी रत्न को सुरक्षित रखने वाले मुनि अभिन्न दशपूर्वित्व रूपी अवस्था को धारण करते हुए अपरिग्रही-संयमी कहलाते हैं और जो मुनि असंयमी स्त्रियों रूपी विद्याओं की सेवा स्वीकार कर लेते हैं वे वैराग्य-भाव से च्युत परिग्रही, असंयमी होते हुए अपने सम्यक्त्व रूपी रत्न को भी अथाह भवोदधि में गवाँ बैठते हैं।

प्र. 227 क्या ऐसी असंयमी देवी रूपी विद्याओं को अपनाने वाला यति ही रुद्र कहा जाता है और उसकी करनी का क्या फल होता होगा?

उत्तर हाँ! जो यति ऐसी असंयमी देवी रूप विद्याओं को स्वीकार कर व विषय-सेवन कर उनमें रमता है वह रुद्र कहलाता है, और वह निश्चित ही अपनी इस अशुभ करनी से अधो-पतन की राह द्वारा घोर दु:खों के द्वार अवश्य खोल लेता है।

प्र. 228 अंग श्रुतधारक श्री धरसेनाचार्य ने जब मुनिवर पुष्पदन्त और भूतबली के लिए जो श्रुतज्ञान देने के पूर्व परीक्षणार्थ एक-एक श्लोक शुद्ध करने दिये थे और उनका ध्यान करते हुए उन मुनियों को दो देवियाँ दिखीं तो क्या इस कार्य को यह मानना अनुचित ही होगा कि उनका यह कार्य देवी सिद्धि के लिए था?

उत्तर हाँ अनुचित ही होगा! क्योंकि गुरु-शिष्य का मन्तव्य देवी-सिद्धि का किञ्चत भी नहीं था। वे देवियाँ तो मात्र उनकी श्रुत-रक्षा रूप विशुद्धि के प्रभाव से यह संकेत दर्शाने उपस्थित हुईं थीं कि इन श्लोकों में जो विकलता है वे हमारे शरीर (एक आँख और एक दांत बाहर) रूप विकलता को देखकर, सही अर्थ ग्रहण कर अपनी बुद्धि के अनुरूप श्लोकों को शुद्ध कर लें। इस तरह न वे देवियाँ सिद्ध की गईं थीं और न वे विषय रमण या चिरकाल को स्थायी बनने आयीं थी बल्कि वे स्वत: उपस्थित होकर श्लोकों की शुद्धि होते ही वास्तविक रूप प्रकट कर तत्काल ही यथास्थान प्रस्थान कर गईं।

प्र. 229 संयमी और महान व्रतों के धारक महाव्रती मुनि जनों के प्रति असंयमी सरागी देवी-देवताओं को वश में करने के कार्य की कल्पना करना कौन-से अनर्थ का कारण है?

उत्तर जब एक सामान्य सम्यदृष्टि भव्यजीव सरागी देवी-देवता की उपासना को मिथ्यात्व मानता है तब इन महा सम्यग्ज्ञानी भव्य मुनीश्वरों के साथ देवादिक की सिद्धि या वश करने की कल्पना करना उन

महाव्रतियों को दासी-दास का परिग्रही बनाते हुए महामिथ्यात्व-पोषक महाअज्ञान या घोर मूढ़ता रूप अनर्थ क्यों नहीं माना जावेगा? अर्थात् अवश्य ही माना जावेगा।

प्र. 230 विद्याधर गृहस्थ मनुष्य तो विद्याओं के स्वामी कहे जाते हैं; तो क्या वे सभी मिथ्यादृष्टि होते हैं या सम्यग्दृष्टि?

उत्तर सभी विद्याधर मिथ्यादृष्टि नहीं होते; जो सरागियों की उपासना कर विद्याओं की प्राप्ति करते हैं वे विद्याधर मिथ्यादृष्टि कहे जाते हैं, लेकिन जो बिना प्रयास ही जाति व कुल आदिक से विद्याओं की प्राप्ति कर वीतराग जिनेन्द्र देव, जिनवाणी और निर्ग्रन्थ गुरुओं की ही आराधना करते हुए सहज प्राप्त विद्याओं का धर्म या सदुपकार के निमित्त प्रयोग किया करते हैं वे विद्याधर सम्यग्दृष्टि कहलाते हैं।

प्र. 231 सेवा इत्यादिक कार्य करने वाली परिग्रह रूप विद्याएँ गृहस्थों के जीवन में कौन-सी अवस्था तक रह सकती हैं?

उत्तर मोक्ष में बाधक भिन्न पदार्थरूप परिग्रह पाप रूप होते हुए भी गृहस्थों के जीवन में न्याय-शीलता के साथ एक सीमा में सीमित रहते हुए पंचम गुणस्थान तक रह सकता है।

प्र. 232 इसी कारण-वश क्या कोई-कोई श्रावक क्षुल्लक जैसी अवस्था में भी विद्याओं का प्रयोग पूर्व काल में किया करते थे?

उत्तर हाँ! पूर्व प्राप्त विद्याओं को अणुव्रत-धारक पंचमगुणस्थानवर्ती क्षुल्लक कदाचित् उन विद्याओं को आज्ञा दे धर्म कार्य किया करते थे; परन्तु मुनि दीक्षा लेने के पूर्व ही उन विद्याओं का त्याग कर दिया करते थे।

प्र. 233 जिनदत्त श्रेष्ठी श्रावक के लिए विद्या की प्राप्ति किस कारण हुई थी?

उत्तर जिनदत्त श्रेष्ठी श्रावक के दृढ़तायुत ध्यान को देखकर बिना कांक्षा (चाहना) के ही देवों द्वारा आकाशगामिनी विद्या प्रदान की गई थी जिससे वे मेरुपर्वत के अकृत्रिम जिनालयों के नित्य दर्शन आदिक किया करते थे।

प्र. 234 अञ्जन चोर को विद्या की प्राप्ति का कारण क्या था और वह विद्या कब तक रही?

उत्तर जिनदत्त श्रेष्ठी श्रावक द्वारा प्रमाणित और प्रसारित किये गये अनादि व अनिधन णमोकार मंत्र पर श्रद्धा कर उसे ध्याते हुए अञ्जन चोर के लिए प्राप्त हुई आकाशगामिनी विद्या उसे मेरु पर्वत पर स्थित अकृत्रिम जिनालयों के दर्शनार्थ ले गई थी और वहाँ विराजित मुनिराज के उपदेश से दीक्षा लेते समय उसने उस परिग्रह रूप विद्या का भी त्याग कर दिया था तथा तप से प्राप्त चारणऋद्धि द्वारा अञ्जन मुनि ने कैलाश पर्वत पर आकर वहाँ से शुक्ल-ध्यान द्वारा सर्व अष्ट-दुष्ट कर्मों का क्षय कर निर्वाण रूप मोक्ष पद को प्राप्त कर लिया था।

प्र. 235 तीर्थंकर-पदधारी मुनिवर को आत्मिक शक्ति रूप प्राप्त ऋद्धियों के माध्यम से जगजन क्या लाभ लेते होंगे?

उत्तर ऐसी तीर्थंकर जैसी आत्माएँ जब दूर-सुदूर तक अपनी चारण ऋद्धि द्वारा आकाश में ऊँचाई से गमन

करते हैं तब स्वपर कल्याण करते हैं; जैसे कि अक्षीण-महानस ऋद्धि द्वारा आहार अक्षीणता (वृद्धि) हो जाना, नीरसाहार भी सरस हो जाना, अक्षीण महालय ऋद्धि से लघुस्थान भी (गुफा जैसा स्थान भी) बड़ा विशाल हो जाना, उनके शरीर से अन्य शरीर को बाधा उत्पन्न न होना, उनके शरीर के प्रभाव से अन्य जीवों के रोगादिक का पलायन होना और सम्पूर्ण लोक के पदार्थों के ज्ञान से दिव्य-ध्वनि द्वारा सम्पूर्ण जगत् के भव्य जीवों के लिए मोक्षमार्ग का उपदेश प्राप्त होना इत्यादिक अनेकों लाभ होते हैं।

प्र. 236 विष्णुकुमार मुनि ने तप से प्राप्त ऋद्धि द्वारा क्या उपकार कर लोक प्रशंसित कार्य किया था?

उत्तर विष्णुकुमार मुनि ने तप से प्राप्त विक्रिया ऋद्धि द्वारा अपने शरीर को विस्तृत बना कर एक पग मेरु पर्वत पर व एक पग मानुषोत्तर पर्वत पर रखने वाला बनाकर बलि राजा का मान खण्डित कर अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों की रक्षा करते हुए बड़ा ही लोक प्रशंसित कार्य किया था।

प्र. 237 विद्या का एक अर्थ कोई अन्य देवी इत्यादिक न होते हुए मात्र ज्ञान रूप होता है; तो ज्ञान रूप विद्याएँ जो आत्मिक शक्तिरूप होती हैं वे मुनियों के जीवन में परिग्रह रूप न होते हुए किस रूप होती होंगी?

उत्तर वे ज्ञान रूप विद्याएँ महामुनियों के जीवन में अन्तरिक्ष, भौम, स्वर, स्वप्न, लक्षण, व्यंजन व छिन्न (चिह्न) रूप अष्ट महानिमित्त की भेदवाली अंग-ज्ञान रूप हुआ करती हैं तथा वे महाज्ञानी मुनिवर इस ज्ञान रूप विद्या का प्रयोग लौकिक कार्यों के लिए कदापि नहीं करते क्योंकि वे विशुद्ध सम्यग्दृष्टि हुआ करते हैं।

प्र. 238 तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा से पूर्व सर्वप्रथम जिन विद्याओं द्वारा ब्राह्मी और सुन्दरी पुत्रियों के ऊपर उपकार किया था वे ज्ञान-विद्यायें कौन सी थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा के पूर्व प्रथम पुत्री ब्राह्मी के लिए लिपि विद्या और द्वितीय पुत्री सुन्दरी के लिए अंक विद्या सिखलाकर उनका महान उपकार किया था।

प्र. 239 तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा पूर्व अपने गृहस्थ जीवन में जन सामान्य को षट् कर्मादिक का उपदेश देकर कितने वर्षों तक कर्मभूमि की उत्तम-व्यवस्था में अपने अमूल्य-जीवन के समय का सदुपयोग किया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा-पूर्व अपने गृहस्थ जीवन में जनसामान्य के लिए तेरासी लाख पूर्व वर्ष तक षट्-कर्मादिक का उपदेश देकर कर्मभूमि की उत्तम-व्यवस्था में अपने अमूल्य-जीवन के समय का सदुपयोग किया था।

प्र. 240 तीर्थंकर ऋषभदेव के दीक्षोपरान्त छदमस्थ अवस्था में कितने वर्ष तपस्या में व्यतीत हुए थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के दीक्षोपारान्त छदमस्थ अवस्था में एक हजार वर्ष तपस्या में व्यतीत हुए थे।

प्र. 241 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए केवलज्ञान की उत्पत्ति किस स्थल पर हुई थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभवदेव मुनीश्वर के लिए केवलज्ञान की उत्पत्ति पर्वतालपुर के निकट हुई थी।

प्र. 242 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए केवलज्ञान किस वृक्ष के नीचे उत्पन्न हुआ था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के लिए केवलज्ञान वट वृक्ष के नीचे उत्पन्न हुआ था।

प्र. 243 केवलज्ञानोत्पत्ति होते ही तीर्थंकर अरिहंत इस धरातल से कितने हस्त ऊपर उठ जाया करते हैं और जहाँ से उनकी वाणी खिरना, व गमन-विराजमान रूप क्रिया हुआ करती है?

उत्तर केवलज्ञानोत्पत्ति होते ही तीर्थंकर अरिहंत का शरीर इस सामान्य धरातल से पाँच हजार धनुष अर्थात् बीस हजार हस्त (हाथ) ऊपर उठ जाता है और उतनी ऊँचाई से ही उनकी वाणी खिरना व गमन-विराजित होने रूप क्रिया सम्पन्न होती है।

प्र. 244 तीर्थंकर अरिहंतों का शरीर इस सामान्य धरातल (भूमि) से पाँच हजार धनुष ऊपर की ओर क्यों उठ जाता है? क्या इसमें कोई विशेष रहस्य है?

उत्तर जगत् में विशिष्ट आत्माओं का स्थान सर्वोपरि होता है, यह अवस्था लोक शिखर तक जाने वाले भावि सिद्ध उन अरिहन्तों भगवन्तों की होती है, तीर्थंकर प्रभु कैवल्य उपलब्धि के उपरान्त परम शुद्ध एवं इतने विशिष्ट आत्मा सुनिश्चित होते हैं कि उन्हें कोई अभव्य और मिथ्यादृष्टि जैसे पुण्यहीन प्राणी देखने में बड़े अभागे होते हैं; इतदर्थ उनका शरीर स्वयमेव पाँच हजार धनुष की ऊँचाई पर चला जाता है।

प्र. 245 तीर्थंकर केवली का दर्शन कौन-से पुण्यवान व भाग्यवान जीव कर पाते हैं?

उत्तर तीर्थंकर केवली का दर्शन जो जीव भव्यत्व के साथ सम्यक्त्व को प्राप्त करते हैं ऐसे वे ही बड़े पुण्यवान व भाग्यवान प्राणी कर पाते हैं।

प्र. 246 साक्षात् तीर्थंकर-केवली भगवान का दर्शन कौन-कौन से प्राणी नहीं कर पाते?

उत्तर आगम-ग्रन्थों में वर्णित है कि साक्षात् तीर्थंकर-केवली भगवान का दर्शन अभव्य जीवों, मिथ्यादृष्टि जीवों, सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों एवं मिश्रगुणस्थानवर्ती जीवों को नहीं होता। (मुनिसुव्रत का.4-130)

प्र. 247 अभव्य व मिथ्यादृष्टि आदिक जीवों को तीर्थंकर-केवली भगवान के साक्षात् दर्शनार्थ निकट जाने में कौन बाधक बन जाता है और वे दर्शन से वंचित किस तरह-से रह जाते हैं?

उत्तर अभव्यों व मिथ्यादृष्टि आदिक जीवों को साक्षात् तीर्थंकर-केवलियों के दर्शन में बाधक उनका मोहनीय व दर्शनावरणीय आदिक कर्म ही समझना चाहिए, जिस कारण अभव्य मिथ्यादृष्टि आदिक जीव प्रभु के समवसरण के निकटस्थ प्रथम परकोट धूलिसाल सम्बन्धी विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित नामक चार द्वारों के समीप पहुँचते ही उन्हें समवसरण में विराजित तीर्थंकर प्रभु तक पहुँचाने वाली वीथियों रूप मार्ग नजर ही नहीं आता तथा वे अन्धे सदृश हो जाते हैं और समवसरण के बाहरी भाग से ही वापस लौट आते हैं।

प्र. 248 भव्य, सम्यग्दृष्टि जीव किस तरह बीस हजार हाथ ऊपर जाकर साक्षात् तीर्थंकर केवली का दर्शन करते होंगे?

उत्तर स्वर्गिक सौधर्मेन्द्र की आज्ञा पाकर कुबेरेन्द्र इस भूमि पर रत्नमय एक विशाल धर्मसभा रूप भव्यों को

शरण देने वाला समवसरण रूप वैभव रचाता है जिसमें तीर्थंकर प्रभु के निकट तक पहुँचने हेतु बीस हजार सीढ़िया रची जाती हैं, जिन रत्नमय सीढ़ियों को भव्य सम्यग्दृष्टि जीव बिना परिश्रम ही थोड़े-से पुरुषार्थ के माध्यम से चढ़ जाया करते हैं और उन पुण्यभागी भाग्यशालियों को सहज ही उन त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर केवली प्रभु का साक्षात् दर्शन हो जाया करता है।

प्र. 249 अरिहंत केवली भगवन्तों की गमनादिक क्रिया क्या उनकी इच्छा पूर्वक हुआ करती है या भव्यों के पुण्य के वश हुआ करती है?

उत्तर अरिहंत केवली भगवन्तों की गमन, बैठना और वाणी खिरने रूप क्रिया स्त्रियों की माया व मेघों के गमन सदृश स्वाभाविक रूप से भव्य जीवों के पुण्य के निमित्त और जग उपकारार्थ उनकी बिना इच्छा के ही हुआ करती है। (प्र.सा. 1.44)

प्र. 250 केवली भगवान की इच्छा रूप प्रवृत्ति होने में क्या बाधा है?

उत्तर इच्छा का प्रकट होना एक तरह का राग-भाव है और जो राग भाव मोहनीय कर्म में गर्भित होता है, जब तेरहवें गुणस्थानवर्ती भगवान मोहनीय कर्म का क्षय दसवें गुणस्थान में ही कर चुके होते हैं तब उनके जीवन में किसी भी तरह की इच्छा प्रकट होने की कल्पना करना व्यर्थ ही समझना चाहिए।

प्र. 251 तीर्थंकर ऋषभदेव के केवलज्ञानोत्पत्ति का हर्ष देवों ने व प्रकृति ने किस तरह प्रकट किया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव ने जब घातिया कर्मों पर विजय प्राप्त की तब संसार भर में शान्ति छा गई। सुरलोक में शीघ्र ही जिनेन्द्रदेव के केवलज्ञान का समाचार ज्ञात हो गया। कल्पवासियों के विमानों में घंटानाद, ज्योतिषी देवों यहाँ सिंहनाद, व्यन्तरों के यहाँ भेरीनाद तथा भवनवासियों के यहाँ भी स्वत: शंख-ध्वनि होने लगी। इन्द्रों के आसन डोलने लगे, मानों जिनेन्द्र देव द्वारा घातिया कर्मों के जीते जाने पर देवों को जो गर्व हुआ था, उसे वे सहन करने में असमर्थ हो आसन-सह दोलायित होते हुये कम्पायमान होने लगे। कल्पवृक्षों से दिव्य-पुष्पों की वर्षा हो रही थी मानों वे प्रभु को पुष्पांजलि अर्पित कर रहे हों। दिशायें धुएँ व धूलादि रहित निर्मल हो गईं थीं। आकाश मेघों से रहित हो गया था। मंद-मंद सुगंधित और शीतल वायु बह रही थी। ऐसे मनोरम वातावरण में देवगण व मनुष्य आदिक उन जिनेन्द्र प्रभु को भक्ति भाव-सह वंदन कर रहे थे।

प्र. 252 देव-गणों ने किस तरह तीर्थंकर ऋषभदेव का केवलज्ञान कल्याणक बड़े वैभव-सह मनाया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव को कैवल्य प्राप्ति होते ही सर्व प्रथम सौधर्मेन्द्र ने स्वर्ग से ही आनंदित होकर उन जिनेन्द्र देव की परोक्ष में वंदना की। तदनन्तर सौधर्मैशानेन्द्र अपनी-अपनी शची के साथ ऐरावत गज पर आरूढ़ होकर अयोध्या नगरी की ओर प्रस्थान करते हैं। इसी तरह सभी देवगण स्व-स्व विमानों में बैठकर अयोध्या नगरी पहुँचते हैं। सौधर्मेन्द्र की आज्ञा पा कुबेरेन्द्र सूर्य मण्डल के समान गोल इन्द्रनील मणिमयी बारह योजन प्रमाण विस्तार वाली भूमि रचकर उसके ऊपर समवसरण की रचना करता है। देवों के अद्भुत् कौशल तथा तीर्थंकर प्रकृति के निमित्त से आदिनाथ ऋषभदेव प्रभु का समवसरण

सौन्दर्य, वैभव तथा श्रेष्ठ कला का अद्‌भुत केन्द्र था। ऐसे महान समवसरण में पहुँचकर देवेन्द्र तीर्थंकर प्रभु की सविनय नमस्कार पूर्वक स्तुति करता है और अष्ट महामंगल द्रव्यों से उनकी पूजा रचाता है तथा अष्ट भूमि व बारह सभा युक्त समवसरण की शरण में अपने को धन्य मानते हुए सभी भव्य गणों-सह इन्द्र प्रभु की अमृतमय दिव्य वाणी को सुनकर केवलज्ञान कल्याण मनाता है।

प्र. 253 सौधर्मेन्द्र ने किस देव के लिए ऐरावत गज का रूप धारण करने की आज्ञा प्रदान की थी?

उत्तर सौधर्मेन्द्र ने नागदत्त नामक आभियोग्य जाति के स्वर्गिक देव के लिए ऐरावत गज का रूप धारण करने की आज्ञा प्रदान की थी।

प्र. 254 तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु के विशाल समवसरण का विस्तार कितना था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के विशाल समवसरण का विस्तार बारह योजन था।

प्र. 255 क्या सर्व तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार एक सदृश होता है या कोई विशेषता है?

उत्तर ऋषभनाथ तीर्थंकर भगवान के बारह योजन समवसरण के विस्तार से शेष अजितनाथ से लेकर बाईस नेमिनाथ तक तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार आधा-आधा योजन कम था। पार्श्वनाथ तीर्थंकर का समवसरण सवा योजन तथा महावीर का समवसरण एक योजन विस्तार वाला था।

प्र. 256 विदेह क्षेत्रस्थ तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार कितना होता है?

उत्तर विदेह क्षेत्रस्थ तीर्थंकरों की शारीरिक अवगाहना पाँच सौ धनुष प्रमाण होती है, अत: वहाँ के समवसरणों का विस्तार नियम से बारह योजन प्रमाण होता है ऐसा आगम है।

प्र. 257 तीर्थंकर प्रभु के समवसरण का संक्षिप्त परिचय किस तरह का है?

उत्तर समवसरण के बाह्य भाग में सर्वप्रथम धूलिसाल परकोट जो रत्नों की धूलि से निर्मित होता है। इस धूलिसाल के बाहर चारों दिशाओं में सवर्णमय खंभों के अग्रभाग पर अवलंबित चार तोरण द्वार शोभायमान होते हैं। धूलिसाल के भीतर जाने पर कुछ दूरी पर चारों दिशाओं में एक-एक मानस्तम्भ होते हैं। वे मानस्तम्भ बड़े ऊँचे घण्टाओं से घिरे, और चँवर तथा ध्वजाओं से शोभायमान होते हैं। ऐसे दिव्य मानस्तम्भों के मूल भाग में जिनेन्द्र भगवान् की सुवर्णमय प्रतिमाएँ विराजित होती हैं, जिनकी इन्द्रगण क्षीरसागर के जल से अभिषेक कर पूजन किया करते हैं। उन मानस्तम्भों में श्रीजिन के मस्तक पर छत्रत्रय शोभित होते हैं। प्रत्येक मानस्तम्भ की चारों दिशि में चार सरोवर निर्मल जल से पूरित होते हैं मानों वे तन के मैल सह कर्म-मैल को धोया करते हैं।

फिर निर्मल जल से पूर्ण खातिका होती है। पश्चात् पुष्पवाटिका होती है। अनन्तर प्रथम कोट होता है। पश्चात् दो-दो नाट्य शालायें होती हैं। उसके अनन्तर अशोक आदि वृक्षों का वन होता है। उसके आगे वेदिका होती है। तदनन्तर ध्वजाएँ शोभित होती हैं। इनके पश्चात् दूसरा कोट होता है। फिर वेदिका सह कल्पवृक्षों का वन होता है। तदनन्तर स्तूप होते हैं और फिर भवनों की पंक्तियाँ शोभित होती हैं।

इसके अनन्तर स्फटिक मणि से रचित तीसरा परकोटा होता है। उसके बाद मुनि, राजादि मनुष्य

और देवादिकों की बारह सभाएँ हुआ करती हैं और अंत में गोल तीन कटनी रूपी पीठिका के ऊपर सहस्रदल स्वर्णिम कमल फिर रत्नजड़ित सिंहासन से अधर में स्वयंभू तीर्थंकर अरहंत-देव विराजित होते हैं। इस तरह यह समवसरण का संक्षिप्त परिचय है।

प्र. 258 एक अपेक्षा से समवसरण में ग्यारह भूमियाँ कौन-सी होती हैं?

उत्तर समवसरण में 1. चैत्यभूमि, 2. खातिकाभूमि, 3. लताभूमि, 4. उपवनभूमि, 5. ध्वजाभूमि, 6. कल्पांगभूमि, 7. गृहभूमि, 8. सद्गुणभूमि, 9. प्रथम मेखला (कटनी) भूमि, 10. द्वितीय मेखला भूमि और 11. तृतीय मेखला भूमि।

प्र. 259 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने गणधर मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में चौरासी गणधर मुनि विराजित थे।

प्र. 260 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने केवली मुनिवर विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में बीस हजार केवली मुनि विराजित थे।

प्र. 261 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने अवधिज्ञानी मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में नौ हजार अवधिज्ञानी मुनि विराजित थे।

प्र. 262 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने शिक्षक मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषदेव के समवसरण में चार हजार एक सौ पचास शिक्षक मुनि विराजित थे।

प्र. 263 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने मन:पर्ययज्ञानी मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में बीस हजार सात सौ पचास मन:पर्ययज्ञानी मुनि विराजित थे।

प्र. 264 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने विक्रिया ऋद्धि धारक मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में बीस हजार छह सौ विक्रिया ऋद्धि धारक मुनि विराजित थे।

प्र. 265 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने अनुत्तरवादी मुनि विराजित थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में बारह (बीस) हजार सात सौ पचास अनुत्तरवादी मुनि विराजित थे।

प्र. 266 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने अंग-पूर्व के ज्ञाता (श्रुतकेवली) मुनिराज विराजमान थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में चार हजार सात सौ पचास अंग-पूर्व के ज्ञाता (श्रुतकेवली) मुनिराज विराजमान थे।

प्र. 267 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने सामान्य मुनिराज विराजमान थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में चौरासी हजार सामान्य मुनिराज विराजमान थे।

प्र. 268 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में आर्यिकाओं की कितनी संख्या थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में आर्यिकाओं की संख्या तीन लाख पचास हजार थी।

प्र. 269 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में श्रावकों की एवं श्राविकाओं की कितनी संख्या थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में श्रावकों की तीन लाख एवं श्राविकाओं की पाँच लाख संख्या थी।

प्र. 270 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में देवगति के देव-देवियाँ कितने थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में देवगति सम्बन्धी देव और देवियाँ असंख्यात थे।

प्र. 271 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में तिर्यञ्च प्राणी कितने थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में तिर्यञ्च प्राणी संख्यात थे।

प्र. 272 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख श्रोता का नाम क्या था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख श्रोता का नाम भरत चक्रवर्ती था।

प्र. 273 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख गणधर मुनि कौन थे?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख गणधर मुनिवर वृषभसेन थे।

प्र. 274 तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख आर्यिका कौन थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में प्रमुख आर्यिका ब्राह्मी थी।

प्र. 275 तीर्थंकरों के समवसरण में प्राणियों के लिए कौन-कौन-सी बाधाएँ और क्यों उत्पन्न नहीं होती?

उत्तर तीर्थंकरों के समवसरण में आतंक, रोग, शोक, प्रसव, निद्रा, बैर, काम, भूख और प्यासादिक की बाधाएँ तीर्थंकर प्रभु के पुण्य के महाप्रताप से उत्पन्न नहीं होती।

प्र. 276 समवसरण में नवमी भूमि रूप प्रथम मेखला (कटनी) क्या विशेषता वाली होती है?

उत्तर समवसरण में नवमी भूमि रूप प्रथम मेखला-पीठिका पर स्थित अष्टमंगल द्रव्य अतिशय शोभायमान होते हैं तथा सुन्दर यक्षों के ऊँचे-ऊँचे मस्तकों पर स्थित धर्मचक्र उदयाचल से उदित होते हुए सूर्य विम्ब सदृश प्रतिभासित होते हैं।

प्र. 277 समवसरण में दसमी भूमि रूप द्वितीय मेखला क्या विशेषता वाली होती है?

उत्तर समवसरण में दसमी भूमि रूप द्वितीय मेखला-पीठिका पर चक्र, गज, वृषभ, कमल, अश्व, सिंह, गरुड़ तथा माला के चिह्न से चिह्नित आठों दिशि में आठ विस्तृत ध्वजाएँ शोभायमान होती हैं।

प्र. 278 समवसरण में ग्यारहवीं भूमि रूप तृतीय मेखला क्या विशेषता वाली होती है?

उत्तर समवसरण में ग्यारहवीं भूमि रूप तृतीय मेखला-पीठिका सर्व रत्नों और मोतियों के हारों से सुसज्जित होती है जिस मेखला के बीचो-बीच चहुँदिशि में मधुर गंध को बिखराने वाली गंधकुटी इस तरह भासित होती है मानो तीर्थंकर प्रभु का परमौदारिक शरीर ही अष्ट-गंध के रूप में अपनी सुगन्धि से भव्यों को संतृप्त कर रहा हो तथाहि ऐसी मनहारी गंधकुटी के मध्य सहस्रदल स्वर्णिम कमल एवं जिस पर रत्न जड़ित सिंहासन अतिशय-शोभाश्री को बढ़ाने वाला होता है और जिस सिंहासन में चतरंगुल ऊपर अधर में तीर्थंकर प्रभु विराजित होते हैं। ऐसी मनभावन तृतीय मेखला होती है।

प्र. 279 तीर्थंकर केवली के सिर पर कौन-से देवों द्वारा कितने चँवर ढुराये जाते हैं?

उत्तर तीर्थंकर केवली के सिर पर आजू-बाजू से कटक, कटि सूत्र, कुण्डल और मुकुटादि अलंकारों से परिपूर्ण सुन्दर यक्षों द्वारा चौसठ चँवर ढुराये जाते हैं।

प्र. 280 सुन्दर आभरणों से युक्त यक्ष क्या तीर्थंकरों मात्र की चँवर ढोरकर सेवा करते हैं या अन्य

पुण्यवान मनुष्यों की भी चँवर ढोरकर सेवा करते हैं? और अन्य पुण्यवान कौन-कौन-से मनुष्यों के सिर पर कितने-कितने चँवर ढोरते हैं?

उत्तर आभरणों से सुन्दर यक्ष चक्रवर्तियों पर सदाकाल बत्तीस चँवर ढोरते हैं। अर्धचक्रवर्ती (नारायण-प्रतिनारायण) पर सोलह चँवर ढोरते हैं। महामण्डलेश्वर राजाओं पर आठ चँवर ढोरते हैं। मण्डलेश्वर राजा पर चार चँवर ढोरते हैं और महाराजाओं पर दो चँवर ढोरते हैं। इस तरह यक्ष देव मनुष्यों की भी बड़ी मनोभावना से सेवा पूर्ण करते हैं।

प्र. 281 तीर्थंकरों के समवसरण में प्रभु के भामण्डल (प्रभामण्डल) की क्या महिमा होती है? उसके रहस्य को बतलाइये?

उत्तर त्रिलोक के प्रकाशमान पदार्थों के तेज को तिरस्कृत करने वाला अथवा अमृत सदृश निर्मल और जगत् को अनेक मंगल रूप दर्पण के समान भगवान् की देह के प्रभामण्डल में भव्यात्माओं के सप्त-सप्त भव दर्शित होते हैं ऐसे महातेज पुञ्ज रूप प्रभामण्डल के कारण समवसरण में रात्रि और दिन का कोई भेद नहीं रहता है।

प्र. 282 समवसरण में स्थित मानस्तम्भों की चारों दिशाओं सम्बन्धी सरोवरों या बावड़ियों में भी आगे, पीछे के तीन-तीन और वर्तमान का एक भव दर्शित होने का वर्णन मिलता है। परन्तु जिन जीवों के मोक्ष होने में एक, दो भव ही शेष हैं तो उन्हें क्या नियम लागू होगा?

उत्तर जिन जीवों के एक, दो भव ही शेष रहते हुए मोक्षपाना निकट होता है वे जीव कल्याण में निमित्त भामण्डल में उतने ही भव देखते हुए वैराग्य-भाव का चिन्तवन मन में लाकर शीघ्र मोक्ष-पुरुषार्थ करने में उत्सुक हो जाते हैं। उन्हें चार, पाँच अथवा छहभवों के दिखने का नियम भी लागू हो सकता है।

प्र. 283 समवसरण-विराजित सहस्रसूर्य-सम प्रतापी प्रभु को निहारने में आँखे कैसे सक्षम होंगी क्या अश्रुपात नहीं होने लगेगा?

उत्तर नहीं ऐसा नहीं होता, जैसे-प्रभु का रूप सहस्र सूर्यों से भी अधिक प्रतापी होता है वैसे ही सहस्रचन्द्रों से भी अधिक शीतल होता है अत: नयन प्रसन्नता का ही अनुभव करते हैं, न कि किसी तरह के कष्ट का अनुभव करते हैं।

प्र. 284 तीर्थंकर केवली की दिव्य-ध्वनि कितनी भाषाओं में खिरती है?

उत्तर तीर्थंकर केवली की दिव्य-ध्वनि अठारह महाभाषाओं और सात सौ लघु भाषाओं में खिरती है।

प्र. 285 जिनेन्द्र देव- केवली प्रभु की वाणी रूप दिव्य-ध्वनि के लिए सार्वार्धमागधी भाषा क्यों कहा जाता है?

उत्तर जिनेन्द्र देव-केवली प्रभु की वाणी रूप दिव्य-ध्वनि लोक के सर्व जीवों की हितकारक होने से 'सार्व' कही जाती है और मागध नामक देवों द्वारा भिन्न-भिन्न भव्य जीवों के कर्णप्रदेशों के समीप तक सरलता पूर्वक पहुँचायी जाने वाली होने से 'मागधी' भाषा कहलाती है।

प्र. 286 जिनेन्द्र देव से खिरी दिव्य-ध्वनि की क्या महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है?

उत्तर जिनेन्द्र-देव से खिरी दिव्य-ध्वनि गम्भीर, मधुर, अत्यन्त मनोहर, निष्कलंक, कल्याणकारी, कण्ठओष्ठ-तालु आदि वचन उत्पत्ति के निमित्त कारणों से रहित, पवन के रोध बिना उत्पन्न हुई, स्पष्ट, श्रोताओं के लिए अभीष्ट तत्त्वों का निरूपण करने वाली सर्वभाषा स्वरूप, समीप तथा दूरवर्ती जीवों के लिए समान रूप से सुनाई पड़ने वाली, शांति-रस से परिपूर्ण तथा उपमा रहित ऐसी अनुपम जिनेन्द्र प्रभु की दिव्य-ध्वनि बड़ी महान होती है।

प्र. 287 जिनेन्द्र प्रभु की दिव्य-ध्वनि विभिन्न जीवों के लिए विविध भाषा रूप कैसे हो जाती है?

उत्तर जिस तरह, एक प्रकार के जल का प्रवाह वृक्षों के भेद से अनेक रस रूप परिणत हो जाता है, उसी प्रकार यह वीतराग सर्वज्ञ जिनेन्द्र देव की दिव्य-ध्वनि एक रूप होते हुए भी विभिन्न जीव-पात्रों के भेद से विविध भाषा रूपता को प्राप्त हो जाती है।

प्र. 288 जिनेन्द्र प्रभु की ओंकार रूप दिव्य-ध्वनि में द्वादशांग श्रुत रूप होने की शक्ति किस तरह निहित होती है?

उत्तर जिनेन्द्र प्रभु की ओंकार बीजाक्षर रूप दिव्य-ध्वनि (वाणी) अनन्त अर्थ हैं गर्भ में जिसके ऐसे बीज पदों से निर्मित शरीरवाली होती है। जैसे-हल के द्वारा सम्यक् प्रकार से तैयार की उपजाऊ भूमि में योग्य काल में बोया गया एक भी बीज बहुत बीजों को उत्पन्न करता है, उसी तरह बीज पद- युक्त वाणी को गणधर देव बीज बुद्धि रूप ऋद्धि से अवधारण करके द्वादशांग श्रुत की रचना करते हैं।

प्र. 289 जिनेन्द्र प्रभु की वाणी अनक्षरात्मक और अक्षरात्मक किस तरह कही गयी है?

उत्तर जिनेन्द्र प्रभु की दिव्य-ध्वनि रूप वाणी श्रोताओं के समीप पहुँचने तक अनक्षरात्मक रहती है, पश्चात् भिन्न-भिन्न श्रोताओं का आश्रय पाकर वह जिनवाणी अक्षर रूपता को धारण कर लेती है।

प्र. 290 जिनेन्द्र प्रभु की वाणी में सत्य और अनुभव वचन किस तरह सिद्ध होता है?

उत्तर जिनेन्द्र प्रभु-केवलज्ञानी की दिव्य-ध्वनि रूप वाणी उत्पन्न होते ही अनक्षरात्मक रहती है, इसलिए श्रोताओं के कर्णप्रदेश से सम्बन्ध होने के समय तक अनुभयवचन योग सिद्ध होता है। इसके पश्चात् वाणी अक्षरात्मक रूप होते हुए श्रोताओं के इष्ट अर्थों के विषय में संशय आदि का निराकरण करने से तथा सम्यग्ज्ञान को उत्पन्न करने से उसी वाणी में सत्य वचन योग का भी सद्भाव स्वत: सिद्ध हो जाता है।

प्र. 291 जिनेन्द्र प्रभु की दिव्य-ध्वनि कौन-कौन से काल में कितने समय तक खिरती है?

उत्तर जिनेन्द्र प्रभु की ध्वनि प्रभात, मध्याह्न, सायंकाल तथा मध्यरात्रि के काल में छह-छह घटिका पर्यन्त अर्थात् दो घण्टा चौबीस मिनिट तक प्रतिदिन नियम पूर्वक खिरती है।

प्र. 292 किन्हीं विशिष्ट पुण्यशाली आत्माओं के लिए असमय में भी क्या दिव्य-ध्वनि खिरती है?

उत्तर भव्यात्माओं के लिए उनके आगमन पर या इनके द्वारा प्रश्न किये जाने पर जिनेन्द्र प्रभु की वाणी असमय भी खिर जाया करती है। इसका कारण यह है उन विशिष्ट आत्माओं के संदेह दूर होने पर धर्मप्रभावना बढ़ेगी और उससे मोक्ष-मार्ग की देशना का प्रचार होगा जिससे तीर्थंकर का धर्म समुन्नत

होगा।

प्र. 293 बारह सभाओं में बैठकर भव्य-प्राणी जिनेन्द्र प्रभु की वाणी किस तरह विनय पूर्वक श्रवण किया करते हैं?

उत्तर समवसरण या गंधकुटी (सामान्य अरिहंतों की सभा) सम्बन्धी बारह सभाओं में भव्य प्राणी जिनेन्द्र प्रभु की ओर मुखकर एवं हाथ जोड़कर विनीत होकर प्रभु की वाणी का श्रवण किया करते हैं न कि प्रभु की ओर पीठ कर बैठते हैं और ना ही देवी, देवतादिक आशीर्वाद की ही मुद्रा धारण करते हैं।

प्र. 294 तीर्थंकर जिनेन्द्र प्रभु के समवसरण से विहार के समय उनके चलते हुए चरणों के नीचे देवों द्वारा कितने स्वर्णिम कमलों की रचना की जाती है?

उत्तर तीर्थंकर जिनेन्द्र प्रभु के समवसरण-विहार के समय उनके पुण्य चरणों के नीचे देवों द्वारा आठ दिशाओं में तथा उनके अष्ट अन्तरालों में सात-सात कमल ऐसे एक सौ बारह कमल, उन सोलह स्थानों के भी सोलह अंतरालों में पूर्ववत् सात-सात कमल इस तरह एक सौ बारह कमल, इनको जोड़ने पर दो सौ चौबीस कमल हुए और प्रभु-चरणों के रखने के स्थान के नीचे एक कमल इस तरह दो सौ पच्चीस स्वर्णिम कमलों की रचना की जाती है।

प्र. 295 तीर्थंकर ऋषभ देव से भव्यों के लिए कितने वर्षों तक समवसरण के माध्यम से दिव्य-ध्वनि द्वारा साक्षात् कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता रहा?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव से भव्यात्माओं के लिए समवसरण में दिव्य-ध्वनि के माध्यम से एक हजार वर्ष कम एक लाख पूर्व वर्ष तक साक्षात् कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता रहा।

प्र. 296 तीर्थंकर ऋषभदेव का समवसरण छोड़ने के उपरान्त मोक्ष प्राप्ति के मध्य कितना काल कैलाश पर्वत पर उत्कृष्ट ध्यान मुद्रा में व्यतीत हुआ?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव का समवसरण छोड़ने के उपरान्त मोक्ष-प्राप्ति के मध्य चौदह दिवस पर्यंत का काल कैलाश (अष्टापद) पर्वत पर उत्कृष्ट ध्यान (योग) मुद्रा में व्यतीत हुआ।

प्र. 297 तीर्थंकर ऋषभदेव मोक्ष जाने के दो दिन पूर्व जब पद्मासन में योग निरोध करने हेतु अष्टापद पर्वत पर विराजित हुए तब प्रभु के मोक्ष जाने के संकेत स्वरूप भरत चक्रवर्ती ने कौन-सा स्वप्न देखा?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्ष जाने के पूर्व भरत चक्रवर्ती ने शुभ और मंगल स्वरूप स्वप्न देखा कि- महा मंदराचल (सुमेरु पर्वत) वृद्धि को प्राप्त होता हुआ प्राग्भार पृथ्वी (सिद्धशिला) तक पहुँच गया है।

प्र. 298 तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्षोपरांत चतुर्णिकाय के देवों ने प्रभु का निर्वाण कल्याणक किस तरह मनाया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्षोपरांत बड़ी भक्ति को धारण करने वाले आलस्य विरहित इन्द्रों सह चतुर्णिकाय के देव आये और प्रभु की अत्येष्टि अर्थात् अन्तिम पूजा कर उनके पवित्र, उत्कृष्ट, मोक्ष के साधन स्वरूप स्वच्छ तथा निर्मल शरीर को उत्कृष्ट मूल्यवान पालकी (आसन) में विराजमान कर

अग्निकुमार नामक भवनवासी देवों के इन्द्र के रत्नों की कान्ति से दैदीप्यमान अत्यन्त उन्नत मुकुटानल, और चन्दन, अगर, कपूर केशरादि सुगन्धित पदार्थों से तथा घृतादि के द्वारा वृद्धि को प्राप्त अग्नि से लोक में अनुपम सुगन्धि को व्याप्त करते हुए प्रभु के उस शरीर को शुद्धाग्नि संस्कार द्वारा भस्मरूप पर्यायान्तर को प्राप्त करा दिया था। तदनन्तर देवों और देवेन्द्रों ने भक्ति पूर्वक पञ्चकल्याणक प्राप्त तीर्थंकर जिनेन्द्र की देह-भस्म को लेकर 'हम भी ऐसे हों' यही विचार करते हुए उस भस्म को अपने मस्तक, भुजायुगल, कण्ठ तथा छाती में लगाकर अत्यन्त पवित्रता का अनुभव करते हुए धर्मरस में डूबकर निर्वाण कल्याणक को सानंद मनाया था।

प्र. 299 तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के साथ कितने महामुनियों ने निर्वाण (मोक्ष)-पद को प्राप्त कर सिद्धालय की ओर गमन किया था?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के साथ एक हजार महामुनियों ने निर्वाण-पद को प्राप्त कर सिद्धालय (लोकशिखर) की ओर गमन किया था।

प्र. 300 तीर्थंकरों की अनुपम सामर्थ्य या अतुल बल का स्थूल दृष्टान्त दीजिये?

उत्तर अनन्त बल युक्त तीर्थंकरों की अनुपम सामर्थ्य की कल्पना करना अल्पज्ञों को शक्य नहीं, फिर भी स्थूल दृष्टान्त द्वारा विचार करते हैं कि- हजारों हाथियों का बल एक सिंह में होता है और हजारों सिंहों का बल एक शरभ (शार्दूल) में होता है। हजारों शरभों का बल एक बलदेव में होता है। दो बलदेवों की शक्ति एक अर्धचक्री (नारायण) में रहती है। दो अर्धचक्रवर्तियों का बल एक नरेन्द्र चक्रवर्ती में होता है। एक हजार चक्रवर्तियों का बल एक इन्द्र में होता है और असंख्य इन्द्रों के बल से भी अधिक शक्ति एक तीर्थंकर में होती है। वास्तव में तीर्थंकरों के जन्म से ही अतुल बल या अप्रतिम वीर्यता नामक एक अतिशय-गुण होता है इतदर्थ उनके बल की तुलना विश्व की किसी शक्ति से नहीं की जा सकती है।

ब्र. व्रती श्री नरेन्द्र भाई नाथालाल मेहता, सूरत के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के आहुरा नगर, सूरत वर्षायोग में ब्र. व्रत एवं अणुव्रत और षोडशकारण व्रत बड़ी श्रद्धा से धारण करने वाले एवं भविष्य में दीक्षा के भाव धारण करने वाले श्री नरेन्द्र भाई मेहता ने फाल्गुन कृष्णा अष्टमी के दिन उपवास के साथ **सम्मेदशिखर जी की चन्दप्रभु टोंक मार्ग** में प्रभु गुण स्मरण के साथ अपनी आयु पूर्ण कर सद्गति की ओर प्रयाण किया एतदर्थ हम सभी गुरुभक्त भाव- विज्ञान पत्रिका परिवार उन्हें नौ बार णमोकार मंत्र की जाप देकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और मंगलमय जीवन में धर्मवृद्धि एवं अपूर्व शांति की भावना करते हैं।

- उन्हें अतीव आनन्द हो इसमें हम हर्ष प्रस्तुत करते हैं, तथा वे स्वर्ग लोक से विदेह क्षेत्र जाकर शीघ्र ही सीमंधर आदि तीर्थंकरों के दर्शन, पूजन, व वंदन कर उनकी साक्षात् वाणी सुनकर हम सबका नमोस्तु अवश्य प्रस्तुत करें ऐसी भावना भाते हैं। धर्मवृद्धि हो, पुण्यलाभ हो और अंत में शीघ्र मुक्तिलाभ हो।

डॉ अजित कुमार जैन, सम्पादक, भाव विज्ञान पत्रिका, भोपाल

सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. तीर्थंकर ऋषभदेव के साथ कितने हजार राजाओं ने दीक्षा ली थी?
प्र. 2. तीर्थंकर ऋषभदेव ने दीक्षा लेते ही कितने माह का योग धारण किया था?
प्र. 3. भ. आदिनाथ के लिए विधिवत् आहार कितने दिनों के बाद कब प्राप्त हुआ ?
प्र. 4. तीर्थंकर केवली की दिव्य-ध्वनि कितनी भाषाओं में खिरती है?
प्र. 5. समवसरण में प्राणियों के लिए कौन-सी बाधाएँ उत्पन्न नहीं होती?
प्र. 6. तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में कितने श्रुतकेवली विराजमान थे?
प्र. 7. समवसरण में एक अपेक्षा से ग्यारह भूमियाँ कौन-सी होती हैं?
प्र. 8. सौधर्मेन्द्र ने किस देव को ऐरावत गज बनने हेतु आज्ञा प्रदान की थी?
प्र. 9. विदेह क्षेत्रस्थ तीर्थंकरों के समवसरण का विस्तार कितना होता है?
प्र.10. तीर्थंकर ऋषभदेव का कर्मभूमि की व्यवस्था में कितना गृहस्थ जीवन व्यतीत हुआ?
प्र.11. तीर्थंकर ऋषभदेव मुनीश्वर के छदमस्थ अवस्था में कितने वर्ष व्यतीत हुए?
प्र.12. केवलज्ञान होते ही तीर्थंकर धरातल से कितने ऊपर उठ जाते हैं?
प्र.13. साक्षात् तीर्थंकर केवली के दर्शन कौन-से जीवों को नहीं हो पाते?
प्र.14. सेविका रूप विद्याएँ गृहस्थों के जीवन में कौन-सी अवस्था तक रह सकती हैं?
प्र.15. संयमी जनों द्वारा असंयमी देवी-देवताओं को रखना कौन-सा अनर्थ है?
प्र.16. भ. आदिनाथ के लिए राजा श्रेयांस ने किन नव विधियों से आहार दिया था?
प्र.17. तीर्थंकर ऋषभदेव का प्रथमाहार किस नगर में किसके द्वारा सम्पन्न हुआ?
प्र.18. तीर्थंकर दीक्षा लेते ही कितनी ऋद्धियों के स्वामी हो जाते हैं?
प्र.19. भरत चक्रवर्ती ने राजाश्रेयांस को क्यों और कौन-से तीन विशेषणों से पुकारा था?
प्र.20. भ. आदिनाथ के साथ कितने मुनियों ने सिद्धालय की ओर गमन किया था?

आधार:आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-**'आगम-अनुयोग'**, (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....
पिता/माता/पति का नाम ....
पता ....
....
मोबाईल/फोन नं. ....

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक-से-अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमश: प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वत: करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अत: अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वत: अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-
सम्पादक, भाव-विज्ञान, एम आई-जी 8/4, गीतांजली कॉम्पलेक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल 462003 (म.प्र.)

गतांक से आगे

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

-आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी

सोमवार 22 नवम्बर को प्रात: 11 बजे आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज का 39वां आचार्य पदारोहण समारोह प्रारम्भ हुआ। इसमें जयपुर के श्रेष्ठीगण श्री गणेशराणा, श्री उत्तमकुमार सरावगी आदि श्रेष्ठीगण पधारे तथा आचार्यश्री का चित्र अनावरण किया और गणेशराणा जी को चातुर्मास प्रमुख कलश प्रदान किया गया। आचार्यश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व पर पं.श्री मूलचन्द लुहाडिया किशनगढ़, डॉ. शीतलचंद जी जैन, पं.श्री चन्दनमल जैन अजमेरा, डॉ.पी.सी जैन आदि ने प्रकाश डाला। अन्त में मुनिराजश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के उद्‌बोधन ने सारे श्रोताओं को आचार्यश्री की साक्षात् उपस्थिति का आभास कराकर भाव विभोर कर दिया। गुरुदेव परम पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में दिनांक 27 व 28 नवम्बर को सांगाकन दि. जैन मन्दिर महावीर पार्क, चौकड़ी मोदी खाना, जयपुर में श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामण्डल आराधना वेदी प्रतिष्ठा एवं शिविर कलशारोहण समारोह बड़े उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

दिनांक 25 नवम्बर को जब विगत तीन दिनों से लगातार वर्षा की झड़ी लगी हुई थी उस समय जैन समाज चिंता की स्थिति में था। समारोह कैसे सम्पन्न होगा? महाराजश्री ने जनसमुदाय को आशीर्वाद दिया कि सब वातावरण अनुकूल हो जायेगा। आश्चर्य की बात, महाराजश्री जैसे ही विहार के लिए मालवीय नगर सेक्टर 3 के लाल जैन मन्दिर से बाहर आये बारिश स्वत: रुक गई और जैसे ही महाराजश्री विहार कर थोड़ा आगे आये धूप की किरणें खिल-खिलाकर चमक पड़ी। जनता ऐसी धर्म प्रभावना देखकर भाव विभोर हो गई। जैन धर्म की जयकार लगाने लगी। सुबह 26 नवम्बर को जब महाराज श्री ने शहर चौकड़ी, मोदीखाना में विशाल जुलूस के साथ प्रवेश किया तब स्त्री, पुरुष बालक नाचते, गाते-झूमते, जयकारे लगाते हुए बैण्ड बाजे के साथ आगे बढ़ रहे थे। चौकड़ी के तमाम मन्दिरों, 25 जिनालयों एवं घरों के आगे महाराज श्री के पादप्रक्षालन किये गये, आरती उतारी गई।

दिनांक 27 नवम्बर को महावीर पार्क स्थित पाण्डाल में कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से हुई। पश्चात् दीपप्रज्ज्वलन किया गया। घट यात्रा शहर के अनेक जगह पर प्रभावना करती हुई कार्यक्रम स्थल पर पहुँची। मण्डपशुद्धि, वेदी शुद्धि, पाण्डालशुद्धि, का कार्यक्रम हुआ। पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ। दोपहर में सौधर्म इन्द्रादि 16 प्रमुख पात्रों चयन पूर्वक एवं समाज के सभी लोगों के सहयोग एवं भक्तिभाव पूर्वक पंचकल्याणक महामण्डल विधान सम्पन्न किया। इसी बीच मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ। रात्रि में राष्ट्रकवि चन्द्रसेनजी के निर्देशन में विशिष्ट कवियों के साथ विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.11.2010 को सुबह गुरु महाराज के प्रवचन के दौरान महापौर श्रीमति ज्योति खण्डेलवाल ने अपने जीवन को अहिंसामयी बनाने का संकल्प किया। उनके साथ भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्रीमान् अरुण चतुर्वेदी व स्थानीय पार्षद आदि समारोह में उपस्थित रहे। पश्चात् हाथी, घोड़ा बैण्ड बग्गियों के साथ गुरुवर के ससंघ

सान्निध्य में भव्य जुलूस श्रीजी की शोभा यात्रा के माध्यम से शहर भर में धूमधाम पूर्वक धर्मप्रभावना की गई। ब्र. जिनेश भैया जबलपुर, अधिष्ठाता वर्णी दि. जैन गुरुकुल के निर्देशन में 9 स्वर्णमयी मूर्तियों को नवनिर्मित वेदियों में सुरक्षात्मक तरीके से विराजमान किया गया एवं शिखर पर कलशारोहण और ध्वजस्थापना का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। अन्त में मुनिवर के मंगलप्रवचन के दौरान मन्दिर कमेटी व समाज द्वारा मुनिसंघ को शीतकालीन प्रवास के लिए निवेदन किया गया। इस प्रकार यह वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

शीतकालीन प्रवास में मुनिश्री से सभी समाज के लोग प्रवचन एवं स्वाध्याय से धर्म लाभ ले रहे थे और गुरुवर के द्वारा आचार्यश्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला भी प्रारम्भ हुई। जिसमें आस-पास के 25-30 मन्दिरों एवं चैत्यालयों के सारे जैन बच्चे पाठशाला में उपस्थित होकर जैन धर्म की शिक्षा हेतु जैनधर्म के रात्रिभोजन त्यागादि आठ नियमों को गुरुदेव से लेकर धन्य हो गये। सभी परिवारों में उत्साह एवं उमंग के वातावरण ने जगह-जगह से गुरुदेव के पधारने हेतु निवेदन आने पर भी गुरुदेव को जाने नहीं दिया। समाज के लोगों का कहना था कि 30 वर्ष के बाद इतनी उत्कृष्ट प्रभावना का अवसर मिला ऐसा सौभाग्य पुन: मिलना बहुत ही दुर्लभ है। जब भक्त के वश में भगवान हो जाते हैं तो गुरु भी क्यों न होंगे। इसी बीच दातारामगढ़ (सीकर) की जैन समाज ने अपने नगर में पञ्चकल्याणक सम्पन्न करने हेतु गुरु सान्निध्य पाने हेतु नम्र निवेदन किया।

शीतकालीन प्रवास के दौरान स्कूल बाल शिक्षा मन्दिर जयपुर में गुरुवर के मंगल प्रवचन सम्पन्न हुये। शीतकाल के प्रवास के पश्चात् मुनिवर का विहार 31 दिसम्बर को चूलगिरि की ओर हो गया। कुछ दिन के प्रवास के बाद खानिया जी नसियाँ, अम्बाबाड़ी, झोटवाड़ा, बैनाड़, खोरा, यादव खेड़ा, राधाकिशनपुरा, हिंगोनिया होते हुए रेनवाल (किशनगढ़) नगर में भव्य प्रवेश हुआ। वहाँ पर श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला द्वितीय वर्षीय कलश स्थापना का कार्यक्रम गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। पश्चात् गुरुवर का विहार श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव हेतु निवेदित दाँता वासियों के पुण्य के उदय से कुली ग्राम होते हुए दाँता नगर में बैंड-बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन नसियाँजी दाँता तहसील दाँता-रामगढ़ जिला-सीकर (राज.) में अभूतपूर्व श्रीमज्जिनेन्द्र मानस्तम्भ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं भव्य जिनेन्द्र स्वर्णरथ शोभायात्रा महोत्सव, जिन धर्म प्रभावक अध्यात्म योगी गुरुवरश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ पावन सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य बा.ब्र. श्री जिनेश जी शास्त्री तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नरेश भैया द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2011 से 27 फरवरी 2011 तक मंत्रोच्चारण सहित सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें 20 फरवरी को ध्वजारोहण के साथ पंचकल्याणक महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। पश्चात् विशाल घट यात्रा नगर परिक्रमा कर पाण्डाल पहुँची। वहाँ वेदी शुद्धि, मण्डप शुद्धि आदि क्रियायें सम्पन्न हुयीं। दोपहर में सकलीकरण, इन्द्र प्रतिष्ठा, भक्तामर विधान आदि हुआ। 21 फरवरी को गर्भकल्याणक पूर्व रूप दिखाया गया। 22 को गर्भ कल्याणक उत्तर रूप दर्शाया। 23 को प्रात: जन्मकल्याणक महोत्सव में तीर्थंकर के जन्म के पश्चात् उन्हें अपने परिवार देवों के साथ सौधर्म इन्द्र द्वारा ऐरावत हाथी पर सवार करके सुमेरु पर्वत पर ले जाया गया और वहाँ 1008 कलशों से जन्माभिषेक बड़े

वैभव के साथ किया गया और दिल्ली से बुलवाये गये बड़े हेलीकाप्टर द्वारा आसमान से पुष्प वृष्टि श्री महावीर प्रसाद-राजकुमार काला कुबेर के द्वारा की गई और हेलीकाप्टर की नौ उड़ानों में अनेक लोगों ने पुष्पवृष्टि कर नगर परिक्रमा लगाई। यह जन्माभिषेक की शोभा यात्रा दाँता नगर वासियों के लिए चिर-स्मरणीय रहेगी। 24 तारीख को तपकल्याणक में गुरुवर द्वारा आदिकुमार की दीक्षा की क्रियायें सम्पन्न हुई। 25 तारीख को केवलज्ञान कल्याणक पर सभी प्रतिमाओं पर सूर्यमंत्र द्वारा केवलज्ञान विधि गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के कर कमलों से सम्पन्न हुई। पश्चात् समवशरण में गणधर के रूप में गुरुवर की मंगल वाणी खिरी। 26 तारीख को मोक्ष कल्याणक विधि सम्पन्न हुई। इस पंचकल्याणक में प्रतिदिन प्रातःकाल और दोपहर में गुरुवर की अमृतमयी देशना सबको मिलती रही और शाम को महाआरती व विद्वानों द्वारा प्रवचन और जयपुर, रेनवाल आदि पाठशालाओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति आदि भी चलती रही। इस पंचकल्याणक में सौधर्म-इन्द्र के रूप में श्री निर्मलकुमार झांझरी डीमापुर वालों ने सशक्त भूमिका निभाई और भगवान के माता-पिता के रूप में कलकत्ता निवासी श्री कल्याणमलजी झांझरी एवं उनकी धर्मपत्नी को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

26 तारीख को मध्याह्न में अहिंसा शाकाहार सम्मेलन रूप संगोष्ठी सम्पन्न हुयी। जिसमें तमिलनाडु की व्रती बहिनों ने मंगलाचरण किया। पश्चात् कवि चन्द्रसेन ने भी कुछ कविताओं के माध्यम से मंगल किया। पश्चात् इसमें पधारे विद्वत्गण जयपुर से डॉ.पी.सी जैन-मालवीय नगर, डॉ. शीतलचन्द्रजी जैन-मानसरोवर, डॉ. बी.एल.बजाज-मालवीय नगर, डॉ. जगेशजी जैन-हिंगुनिया, डॉ. किरण गुप्ता-बापू नगर, डॉ. महेन्द्रजी जैन-जोबनेर, डॉ. नवीनजी जैन (योगाचार्य)-बरेली, डॉ. संजय जैन-पथरिया दमोह, डॉ.श्रीमती कला कासलीवाल, ब्र. जिनेशजी जैन जबलपुर, पं.महेशजी डीमापुर, श्री देवेन्द्रजी जैन कलकत्ता, पं. संजयजी जैन शास्त्री, छतरपुर, ब्र. नरेशजी जबलपुर से पधारे, डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, इंजी. महेन्द्र जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल आदि सबने अपने आलेखों द्वारा अहिंसा एवं शाकाहार के गुणों के बारे में बताकर लोगों को प्रभावित किया। पश्चात् मुनिश्री ने भी शाकाहार के विभिन्न गुणों पर प्रकाश डालकर लोगों को लाभान्वित किया। जिसे सुनकर स्थानीय उपसरपंच श्री ओमेन्द्र सिंहजी (राजपूत) ने मांसाहार का त्याग कर दिया। डॉ. देवकुमारजी जैन, नई दिल्ली ने जैनागम संस्कार (तमिल भाषा में) का साहित्य विमोचन करवाया। भाव-विज्ञान (नया अंक) का विमोचन विद्वत्गणों के द्वारा किया गया। गोष्ठी में आये हुए अतिथियों का सत्कार श्री महावीर प्रसाद काला कलकत्ता वालों ने किया। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सम्पन्न हुआ।

27 फरवरी को पंचकल्याणक महोत्सव का अन्तिम दिन था, जिसमें श्रीजी की भव्य शोभायात्रा से सभी अन्यकार्यों को भूलकर भगवान के जय-जयकारों के नाद के साथ अपने आप को कृत-कृत्य अनुभव कर रहे थे। इससे दाँता नगर में एक अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। पश्चात् मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त मानस्तम्भ में स्थित जिनबिम्बों का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। दिन में 2 बजे से मुनिश्री के सान्निध्य में तथा रात्रि 8 बजे से अनेक कवियों के बीच राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का रोचक कार्यक्रम हुआ। कवि चन्द्रसेन आदि ने हम सभी के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये अपनी कविताओं को एक अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया। इसी पंचकल्याणक के बीच मंदिर कमेटी के मंत्री श्री हरकचन्दजी के द्वारा पंचकल्याणक की बचत राशि से आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम बनाने की घोषणा मुनिवर आर्जवसागरजी की मंगलप्रेरणा व आशीर्वाद से की। तथा

इसका शिलान्यास का कार्यक्रम 7.3.2011 को गुरुवर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस तरह पूज्य गुरुवरश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ यह पंचकल्याणक महोत्सव दाँता के इतिहास में कभी न भूलने वाला ऐतिहासिक महोत्सव बन गया।

गुरुवर ने दांता से विहार कर रामगढ़, कोछोर (जहाँ पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की पूर्व अवस्था की माँ आर्यिका श्री समयमति माताजी की सल्लेखना हुई थी) से होते हुए जब 9 मार्च 2011 के राणोली नगर में पहुँचे तो वहाँ के जिनभक्तों द्वारा भक्ति से बाजों के साथ मंगल प्रवेश कराया गया और जिनदर्शन के उपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें सभी ट्रस्टी गण व पूरी समाज ने गुरुवर के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर अष्टाह्निका पर्व पर गुरुवर के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर अष्टाह्निका पर्व पर गुरुवर के सान्निध्य प्राप्त हेतु नम्र निवेदन किया। यह वही राणोली नगर था जहाँ पर महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का भूरामल के रूप में जन्म हुआ था। उस जन्मगृह को एक स्मारक के रूप में बनाया गया है। उसका भी गुरुवर को अवलोकन कराया। मुनिवर के ग्राम प्रवेश के दिन से ही शाम को यहाँ ''आचार्य ज्ञानसागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला' का शुभारम्भ हुआ। जिसमें प्रथम दिन से ही लगभग चालीस बालक, बालिकाओं ने जैन धर्म के संस्कारों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया और इसके संचालन के लिए एक संकल्प कलश की स्थापना की गई। 12 मार्च को श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु नसियाँजी में मुनिश्री के ससंघ सान्निध्य में भ.चन्द्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक मनाया गया। इस अवसर पर श्री शान्तिनाथ विधान कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया।

12 से 19 मार्च तक बड़े मन्दिरजी में नन्दीश्वर द्वीप मण्डल विधान की पूजन संगीतमय प्रारम्भ हुई पूजा अर्चना स्थानीय पण्डित विनोदकुमारजी जैन शास्त्री द्वारा कराई गई। अष्टाह्निका पर्व के इन आठ दिनों में प्रतिदिन मुनिश्री ने अपने मंगल उद्‌बोधन में जैनागम के गूढ़ रहस्यों पर सरल भाषा में प्रकाश डाला। 15 मार्च को गांव की एक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था ''ग्रामीण बाल विकास उच्च माध्यमिक विद्यालय'' में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल उद्‌बोधन हुआ। जिसमें मुनिश्री ने विद्यार्थियों को जीवन की कल्याणकारी बातों से अवगत कराते हुए गुरु के प्रति विनयशीलता तथा मांसाहार, शराब एवं तम्बाकू सेवन से होने वाली हानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं इन सबके त्याग करने का संकल्प कराया। 15 मार्च को ही समाज के प्रबंधकारिणी के सदस्यों ने मुनिश्री को अवगत कराया कि स्थानीय चन्द्रप्रभु नसियाँजी का यह शताब्दी वर्ष चल रहा है और इस उपलक्ष्य में उन्होंने विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की आशा जताई; तो मुनिश्री ने ''पंचकल्याणक महामण्डल विधान एवं मानस्तम्भ का अभिषेक का कार्यक्रम आयोजित करने की सलाह देते हुए इसके लिए 20-21 मार्च का समय स्थानीय समाज को दिया। समाज के पदाधिकारियों ने इसे मुनिश्री के आशीर्वाद के रूप में लेते हुए आयोजन की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी और मात्र 4 दिन के अल्प समय में देश के कोने-कोने में कार्यक्रम की सूचना पहुँचा दी। इस अवसर पर 20 मार्च को जब पूरे गांववासी जैन समाज के लोग केसरिया वस्त्रों में सुसज्जित हो पंचकल्याणक मण्डल विधान की आराधना में लीन थे। टीकमगढ़ (म.प्र.) से पधारे विधानाचार्य पं. मनीषजी दिगम्बर ने शास्त्रोक्त विधि विधान से प्रात: ध्वजारोहण करवाया, ध्वज जब पूर्व दिशा की ओर लहराया तो मुनिश्री इसे अत्यन्त शुभ का सूचक बताते हुए सबके लिए मंगलकारी बताया। विधान में सौधर्म इन्द्र आदि प्रमुख पात्र बनकर सबने भगवान की भक्ति का लाभ लिया। कार्यक्रम के

दूसरे दिन 21 मार्च को प्रात: काल विश्वशान्ति महायज्ञ के बाद मुनिश्री का ध्यान और योग पर मार्मिक उद्‌बोधन हुआ और इसके विभिन्न प्रकारों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए ध्यान एवं योगी क्रियाओं से होने वाले लाभों को बताया। इस अवसर पर बाहर से पधारे विशिष्ट जनों में कीर्तिनगर जयपुर के जैन समाज के अध्यक्ष श्री महावीर प्रसादजी कासलीवाल, सूरत के उद्योगपति श्री नरेशकुमारजी ने मुनिवर को शास्त्र भेंट किया। महाराजश्री के गृहस्थ जीवन के लघु भ्राता डॉ. संजयजी जैन आदि पधारकर सम्मानित हुए। इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद ही श्रीजी की भव्य रथयात्रा निकाली गई। जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर पूरे गाँव के वातावरण में भक्ति रस घोल दिया। गाँव के प्रमुख मार्गों से होती हुई रथ यात्रा वापिस नसियाँजी पहुँचने के पश्चात् नसियाँ जी में बने मानस्तम्भ के मनोज्ञ जिनबिम्बों के अभिषेक का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पश्चात् गुरुवर ने मंगल उपदेश दिया। इस प्रकार यह कार्यक्रम मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। उसी दिन दोपहर में मुनिश्री ने ससंघ भव्योदय अतिशय क्षेत्र रेवासा की ओर मंगल विहार किया तो दिनभर से कार्यक्रम का आनन्द ले रहे समाज के प्रत्येक वर्ग की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। नन्हें बालक एवं बालिकाओं जिन्हें मुनिश्री का सर्वाधिक वात्सल्य मिला था उनके आंसु तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। सभी ने सजल नेत्रों के साथ मुनिश्री को रैवासा तक पहुँचाया।

गुरुवर का भ.सुमतिनाथ भगवान के इस अतिशय क्षेत्र का अवलोकन कर मन अत्यन्त प्रफुल्लित हुआ। वहीं पर स्थित धर्मशाला में ठहरकर दूसरे दिन आहारचर्या करके नगर सीकर की ओर विहार हो गया। सीकर में दीवानजी नसियाँ में दर्शन के उपरान्त गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ। जिससे समाज ने गुरुवर से प्रभावित हो करके मुनिवरश्री के चरणों में कुछ दिन ठहरने हेतु निवेदन भी किया। लेकिन मुनिश्री ने सुजानगढ़ और लाडनूँ की ओर विहार कर दिया।

सुजानगढ़ और लाडँनू पहुँचने पर वहाँ की समाज ने बाजों एवं धर्म की जयघोष रूप प्रभावना के साथ गुरुवर का ससंघ अपने नगर में मंगल प्रवेश कराया। गुरुवर ने भूगर्भ से जिन मन्दिर सहित प्राप्त श्री अजितनाथ, श्री शान्तिनाथ प्रतिमाओं का और भी प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शनकर बड़े संतोष का अनुभव किया। इस तरफ विहार की सफलता प्राप्त हो गई। क्योंकि यहाँ साधु बहुत कम जा पाते हैं। बीच में समाज का अभाव है और यहाँ से पाकिस्तान नजदीक पड़ता है यह रेगिस्तान है। गुरुवर का यह मंगल विहार कीर्तिनगर जयपुर वालों ने करवाया। समाज ने संत का समागम पाकर अब उनके चरणों को पकड़ लिया वे छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। प्रतिदिन के प्रवचन में पूरा मन्दिर भर जाता था। गुरुवर की अमृतमयी वाणी का लाभ उठाया और शाम को गुरुभक्ति एवं पाठशाला के प्रारम्भ माध्यम से धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। एक दिन डॉ. जिनेन्द्र जैन ने लाडँनू में स्थित 'जैन विश्व भारती' का अवलोकन हेतु गुरुवर से निवेदन किया और वे सभी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज को ससंघ वहाँ ले गये। वहाँ पहुँचकर प्रेक्षागृह का अवलोकन करते हुए हजारों शास्त्रों एवं प्राचीन प्रतिलिपियों को देखकर महाराज ने बहुत ही प्रशंसा की और वहीं पर स्थित स्थानकवासी श्वेताम्बर साधुओं ने गुरुवर का मंगल उपदेश बहुत ही उल्लासपूर्वक सुना। प्रमुख साध्वी ने तो गुरुवर को शास्त्र भेंट कर पुन: पधारने हेतु निवेदन भी किया। पुन: धर्मशाला में आकर गुरुवर ने समाज से कहा कि ऐसा श्वेताम्बरों जैसा स्थान, ऐसे संग्रहालय का कार्य दिगम्बर जैन समाज को भी अपनी रीति से करना चाहिए ऐसा उपदेश दिया। लाडँनू बस

स्टेण्ड पर स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं सुखदेव आश्रम का दर्शन किया जो कि पूरा सफेद मार्बल से बना हुआ है। कुछ दिन प्रवास के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार डेह ग्राम से होते हुए एक दिन नागौर नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। नागौर स्थित मन्दिरों का व ग्रंथालय का अवलोकन किया। यहाँ पर गुरुवर ने पहली बार साढ़े सोलह पंथी मन्दिर का दर्शन किया। जिसको बीसपंथी व तेरापंथी क्रिया वाले लोगों ने मिलकर बनाया। पश्चात् वहाँ से मूण्डवा, मेड़ता रोड, मेड़ता सिटी से होते हुए गुरुवर का भव्य मंगल प्रवेश मुनि भक्तों के श्रेष्ठ भावना पूर्वक ब्यावर नगर में हुआ। यहाँ की सकल दि. जैन समाज ने गुरुवर का महावीर जयन्ती पर सान्निध्य प्राप्त हो इस हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। ब्यावर नगर के कुछ दिनों के प्रवास में प्रवचनमाला एवं धार्मिक पाठशाला प्रारम्भकर धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई।

महावीर जयन्ती के दिन प्रात:काल श्रीजी की शोभा यात्रा बेण्ड बाजे एवं गुरुवर के ससंघ और अपार जनसमूह के साथ पूरे नगर में सभी मन्दिरों से होते हुए अपूर्व धर्मप्रभावना के साथ मेन बाजार पहुँची जहाँ पर रोड पर बने पाण्डाल में गुरुवर के मंगल प्रवचन हुए जिसमें लोगों को अहिंसा एवं जिनधर्म की रक्षा हेतु संकल्पित करवाया गया इस तरह यह प्रात: कालीन कार्यक्रम मंगलमय सम्पन्न हुआ। दोपहर में नसियाँ के प्रांगण में गुरुवर की 23वीं दीक्षा जयन्ती समारोह बहुत ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें मंगलाचरण, चित्र अनावरण, दीपप्रज्वलन, पादप्रक्षालन, गुरुवर की पूजन, आरती एवं बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत सम्मान आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार हो गया। जहाँ पर जैनियों के लिए 15 साल से कोई मुनि महाराजजी नहीं मिले थे ऐसे पीसांगन ग्राम में बाजों एवं बहुत जन सैलाव के साथ 22.4.11 तारीख को भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रतिदिन के प्रवचन में जैन तो लाभ लेते ही थे लेकिन अन्य मतावलम्बियों ने भी गुरु प्रवचनों का बहुत लाभ लिया। शाम को पाठशाला भी चलती थी। दो दिन प्रवास के पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार सराधना, नारेली (ज्ञानोदय तीर्थ) तथा बीर होते हुए नसीराबाद की ओर हो गया। जहाँ पर महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज को आचार्य पद मिला था और वहीं पर जिन्होंने आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद दिया और एवं वयोवृद्ध आ.ज्ञानसागरजी ने जहाँ समाधि (सल्लेखना) ली थी ऐसे नसीराबाद नगर में गुरुवर का मंगल प्रवेश 29.4.11 को बाजों एवं जय-जयकारों के साथ सम्पन्न हुआ। गुरुवर के मंगलप्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट कर नम्र निवेदन किया। जहाँ दिनांक 8.5.11 को अक्षयतृतीया पर्व गुरुवर के मंगल सान्निध्य में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें भोपाल से पधारे गुरुभक्तों के समक्ष कुंथीलाल गदिया आदि परिवार वालों ने भाव विज्ञान सदस्यता प्राप्त करते हुए भाव विज्ञान पत्रिका के नवीन अंक का विमोचन किया। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन आदिनाथ के जीवनवृत्त पर सम्पन्न हुये और प्रतिदिन प्रवचन की शृंखला, दोपहर में स्वाध्याय एवं शाम को धर्म संस्कार की कक्षायें चलीं। श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की स्थापना भी करवाई। 31 मई 2011 को सेठजी नसियाँजी में विराजमान, मूलनायक श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान के गर्भ, तप एवं मोक्ष कल्याणक का आयोजन मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक शान्तिनाथ विधान पूजन के साथ सम्पन्न हुआ।

1 जून 2011 को गुरु नाम गुरु महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का भव्य समाधि दिवस गुरुवर आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: स्थानीय समाज के साथ विभिन्न नगरों की जैन पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने मुनिश्री के सान्निध्य में आचार्य ज्ञानसागर महाराज के समाधि स्थल से सल्लेखना स्थल तक प्रभातफेरी एक बड़े जुलूस के रूप में निकाली। देश के विभिन्न स्थानों से पधारे विद्वानों ने एवं वक्ताओं ने इस कार्यक्रम में महाकवि आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के जीवन के तथा आचार्य विद्यासागरजी महाराज के साथ गुरु-शिष्य संबंधित अनेक रोचक संस्मरण प्रसंगों से श्रोताओं को सुनाकर भाव विभोर किया। इस अवसर पर मध्याह्न में पाठशाला सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमे रोड पर बने विशाल पाण्डाल में विभिन्न नगर जैसे-रेनवाल, जयपुर, जोबनेर, अलवर आदि 15-20 पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं ने आकर्षित एवं मनमोहक कार्यक्रमों नाटक आदि का प्रस्तुतीकरण किया। पश्चात् गुरु महाराज ने अपने मंगल प्रवचनों में आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के मंगलमय जीवन वृत्त एवं संस्कार के महत्त्व के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को सतत् धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। इस प्रकार यह समाधि दिवस समारोह कभी नहीं भूलने वाला एक ऐतिहासिक महोत्सव बन गया।

पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार हो गया। ढेरांठू ग्राम पर गुरुवर का आगमन हुआ। बहुत दिनों से मुनियों का सान्निध्य प्राप्त न होने से समाज के लोगों में अपूर्व उत्साह था। 5-6 दिन के प्रवास के पश्चात् सानोद, मोराझड़ी, मण्डावरिया, लम्बा, झाड़ली, अनियारा खुर्द, कुवाड़ा बुजर्ग- (जहाँ पर 30 साल से महाराज नहीं आये थे) बुधारा (अतिशय क्षेत्र) से होते हुए 23.6.11 तारीख को टोडारायसिंह में बाजों एवं अपार जन समूह के साथ भव्य मंगलप्रवेश हुआ। पहाड़ पर दर्शन, प्रवचन आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की और समाज के लोगों ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया ओर अल्प अवधि में धार्मिक पाठशाला भी खुलवाई। पश्चात् गुरुवर का मंगल विहार सांखना अतिशय क्षेत्र नगर फार्ट से होते नैनवाँ नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ पर नौ मन्दिर हैं। गुरुवर का बड़े मन्दिर में प्रवास रहा और यहाँ पर कोटा व रामगंजमंडी से समाज के लोगों ने गुरुवर के चरणों में अपने नगर में इस बार भव्य वर्षायोग सम्पन्न हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। दो-तीन तक वहाँ पर धर्म प्रभावना के पश्चात वहाँ से विहार कर दिया। पश्चात् देई, पिप्लाई, खरकड़, मायाजा से होते हुए केशवराय पाटन अतिशय क्षेत्र पर मंगल प्रवेश हुआ। नदी के किनारे स्थित श्री मुनि सुव्रतनाथ भगवान के इस प्रसिद्ध क्षेत्र का दर्शन किया। आहार चर्या के पश्चात् दोपहर में विहार कर दिया। कोटा महानगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। कोटा में स्थित रिद्धि-सिद्धि नगर, वल्लभ नगर, विज्ञान नगर का दर्शन करते हुए भारी जन समूह द्वारा दादाबाड़ी में बाजों के साथ गुरुवर के ससंघ मंगल प्रवेश कराया गया। जिन दर्शन पश्चात् गुरुवर श्री 108 आर्जवसागरजी का मंगल प्रवचन हुआ। जिसमें पूर्ण कमेटी के लोगों एवं सकल दि. जैन समाज कोटा द्वारा चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंट किये गये लेकिन दो दिन रहकर प्रवचन, चर्या आदि से प्रभावना कर विहार हो गया। महावीर नगर, आर.के.पुरम्, मोड़क होते हुए रामगंजमंडी में 18.7.11 तारीख को प्रात: 7:30 बजे बेंड बाजों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जिसमें जुलूस के रूप में महिलायें केसरिया वस्त्र पहने मंगल कलश लेकर चल रहीं थीं। पुरुष वर्ग श्वेत वेशभूषा में ध्वज लेकर चल रहे थे।

जगह-जगह पर मुनिश्री का पादप्रक्षालन एवं आरती की गई। 51 स्वागत द्वार बनाये गये बड़े उल्लास और उमंग के साथ मुनिश्री के साथ यह विशाल जुलूस नगर की परिक्रमा करता हुआ प्रात: 8:30 बजे श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिरजी में पहुँचा। जिनदर्शन के उपरान्त गुरुवर ससंघ मंचासीन हुये। स्थानीय महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण किया गया। चित्र-अनावरण, दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् गुरुवर का मंगल उद्बोधन हुआ। कमेटी व समाज द्वारा चातुर्मास हेतु गुरुवर के चरणों में श्रीफल भेंट किये।

दिनांक 20.7.11 को प्रात: 6 बजे मुनिश्री का ससंघ बैंड बाजों के साथ 1 कि.मी. दूर पर स्थित श्री शान्तिनाथ दि. जैन नसियाँजी में मंगल प्रवेश कराया गया। चातुर्मास कलश की स्थापना का कार्यक्रम यहीं पर सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रमुख कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री आचार्य विद्यासागर धर्म प्रभावना संघ जयुपुर वालों ने प्राप्त किया। मुनिश्री के मंगल प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 8:30 बजे होते थे। दोपहर में 3:30 बजे रत्नकरण्डक श्रावकाचार आदि की कक्षायें लगीं और सायंकाल में गुरु भक्ति एवं पाठशाला के बच्चों को स्तोत्र स्तुति, पाठ के द्वारा ज्ञानार्जन कराया जा रहा था। मोक्षसप्तमी निर्वाण लाडू चढ़ाकर भ. पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक महोत्सव मनाया गया। दिनांक 13.8.11 से 13.9.11 तक 32 दिवसीय षोडसकारण महापर्व व्रत महोत्सव प्रारम्भ हुआ। जिसमें करीब 80-90 लोगों ने षोडसकारण व्रत करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध करने में अपना नाम जोड़ने के लिए उत्सुक रहे। षोडसकारण व्रत महोत्सव में मंगलकलश की स्थापना श्रीमान् स्व.अनन्तकुमारजी बागड़िया परिवार में श्री चक्रेशकुमार एवं आदित्यकुमार बागड़िया ने की। इसी परिवार ने श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन नसियाँजी की तीनों वेदियाँ तथा उसमें श्रीजी विराजमान किये तथा एवं ध्वजारोहण भी इसी परिवार ने कराकर अपने चंचल लक्ष्मी का उपयोग किया।

दिनांक 2.9.11 से 11.9.11 तक दशलक्षण पर्व में अनेक प्रदेशों से आये श्रावकों ने तथा स्थानीय श्रावकों ने श्रावक साधना संस्कार शिविर में भाग लेकर धर्मामृत का पान किया। दशलक्षण कलश की स्थापना का सौभाग्य श्री अमरकुमार जैन (प्रोफेसर) परिवार को मिला। बहुत ही सरल स्वभाव वाले गुरुवर को पाकर रामगंजमंडी वाले बहुत हर्षित होते थे। जैसा नाम आचार्यश्री ने रखा उसे गुरुवर ने सार्थक करके दिखा दिया।

पूज्य मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में नसियाँ में दिनांक 25 से 30 सितम्बर 2011 तक श्री समवशरण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें स्थानीय श्रावकों के साथ भारत के अनेक प्रान्तों से तथा आस-पास के लगभग 30-40 नगरों से पधारे नर-नारियों ने इन्द्र-इन्द्राणि बनकर प्रभु की अर्चना करके सातिशय परम पुण्य का अर्जन किया। यह विधान श्रीमान् पुष्पेन्द्रकुमार शिखरचन्द, कैलाशचन्द्र टोंग्या परिवार रामगंजमंडी की ओर से कराया गया। इस विधान पूर्वक अशोक नगर से पधारे ब्रं. पंकज जी, पं. जयकुमारजी ललितपुर, पं. महावीरकुमारजी जैन भवानीमण्डी ने सम्पन्न कराया। नित्य संगीतमय पूजन के साथ सैकड़ों भक्तजन भाव विभोर हो जाते थे। समवसरण की रचना मात्र दो दिन में की गई। देखकर ऐसा लगा कि वास्तव में साक्षात् जिनेन्द्र देव भगवान का समवसरण ही आ गया हो। विधान समापन के बाद मुनिश्री के सान्निध्य में विशाल भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ। जुलूस पूरे नगर में भ्रमण करते हुए श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर में पहुँचा। मुनिश्री के आशीर्वचन के साथ विधान का समापन हुआ। मुनिश्री के

चातुर्मास से नगर में चारों ओर धर्ममय वातावरण हो रहा था।

1 अक्टूबर 2011 को मुनिश्री के सान्निध्य में राजस्थान का चतुर्थ ''धार्मिक पाठशाला सम्मेलन'' का आयोजन किया गया जिसमें नसीराबाद, जयपुर, किशनगढ़, रेनवाल, रावतभाटा, बौरावद, रामगंजमंडी आदि की अनेक पाठशालाओं के बालक-बालिकाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन पाठशालाओं में प्रथम नसीराबाद की पाठशाला रामगंजमंडी द्वितीय तथा रावतभाटा तृतीय स्थान पर रहे। सभी पाठशालाओं का समाज की ओर से सम्मान किया गया, मोमेन्टो वितरित किये गये एवं दिल्ली वालों की ओर से भी यात्रासंघ द्वारा सभी पाठशालाओं को पुरस्कार दिये गये।

2 अक्टूबर 2011 को मुनि श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में 'धार्मिक कवि सम्मेलन'' आयोजित किया गया। जिसमें कई स्थानीय तथा बाहर से पधारे महिला पुरुषों ने स्वरचित काव्यों का पाठ किया गया। भोपाल से पधारे पं. लालचंद राकेश एवं श्रीपाल दिवा ने भी कविताएँ प्रस्तुत की और मुनिश्री ने भी अपनी कवितायें सुनाईं। सभी कवियों को समाज की ओर से सम्मानित किया गया।

16 अक्टूबर 2011 को ''अहिंसा सम्मेलन'' का कार्यक्रम किया गया जिसमें विश्व हिन्दु परिषद् के अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान् हुकमचंदजी सांवला इन्दौर ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत कर सबके मन को आश्चर्य चकित कर दिया। भारतीय जनता पार्टी कोटा जिला उपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, जयपुर से पधारे श्री डी.आर. जैन, तामिलनाडु से पधारे पं. श्री धन्यकुमार जैन एवं विद्वान् अजितदास जैन चेन्नई ने भी अहिंसा विषय पर प्रकाश डाल अपने विचार प्रस्तुत किये। पश्चात् मुनिश्री ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। पश्चात् मुनिश्री ने भी अपने प्रवचन में अहिंसा का महत्त्व बताया।

16 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक कण्ठ-पाठ प्रतियोगिता का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक लोगों ने भाग लिया। 18 अक्टूबर को मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में भ.महावीर स्वामी का 2538 वाँ निर्वाण महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रात:काल जिनाभिषेक, पूजा, अर्चना श्रावकों के द्वारा की गई तथा अपार जनसमूह के बीच निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। इसी दिन मुनिवर का चातुर्मास निष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 30 अक्टूबर 2011 को पिच्छिका परिवर्तन समारोह अपार जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ जिसमें ग्वालियर, दमोह, जयपुर, नसीराबाद, दांता रामगढ़, सिंगोली, संधारा, जोबनेर, तमिलनाडू, कोपरगाँव, भवानीमण्डी आदि स्थानों से कई श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इसी दिन सिंगोली पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया उसके पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन एवं चित्र अनावरण अतिथियों द्वारा किया गया और कण्ठपाठ प्रतियोगिता में जिन्होंने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाये थे उनको प्रतीक चिन्हों द्वारा पुरस्कारित किया गया। इसके उपरान्त रामगंजमंडी पाठशाला के बच्चों द्वारा धार्मिक प्रस्तुतित दी गई एवं सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा मुनिश्री से क्षमायाचना की गई व समस्त दिगम्बर समाज द्वारा अष्टाह्निका पर्व, मुनिश्री के सान्निध्य में मनाने हेतु श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् पिच्छिका परिवर्तन में मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ को श्री पुष्पेन्द्र टोंग्या, हुकुम सेठी, अमरकुमार, जीतमल आदि ने नवीन पिच्छिका प्रदान की और पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य श्री निरंजन एवं अनिता डुंगरवाल रामगंजमंडी वालों को प्राप्त हुआ एवं

अन्य लोगों ने भी इस सौभाग्य को प्राप्त किया।

पश्चात् मुनिवर का मंगल प्रवचन सम्पन्न हुआ और मंगलकलश स्थापना कर्त्ताओं को कलश प्रदान किया गया। इस प्रकार रामगंजमंडी में सन् 2011 को मंगल वर्षायोग सानन्द सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास के उपरान्त गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का दिनांक 2 नवम्बर को रामगंजमंडी से विहार हो गया। झालावाड़ होते हुए 5 नवम्बर को गुरुवर का ससंघ चांदखेड़ी अतिशय क्षेत्र पर बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ। प्राचीन श्री आदिनाथ प्रभु का दर्शन कर मन गद्‌गद् हो गया। कमेटी के लोगों ने गुरुवर से शीतकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया। संत शिरोमणि परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का 40वाँ आचार्य पदारोहण दिवस परम पूज्य आध्यात्मिक योगी मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में मार्गशीर्ष कृष्ण 2 दिनांक 12.11.11 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चांदखेड़ी खानपुर में भव्य विशाल रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसमे कोटा, जयपुर, खानपुर, दिल्ली, पथरिया, उज्जैन, भोपाल, कराड़िया (भवानीमंडी) तथा धर्मप्रभावना संघ, रामगंजमंडी आदि कई स्थानों से पधारे हजारों भक्तजनों ने भाग लेकर पुण्य संचय किया। इस समारोह के मुख्य अतिथि खानपुर विधान सभा क्षेत्र के विधायक श्री अनिल जैन, अध्यक्षता श्री कैलाशचंद सर्राफ (कोटा) एवं विशिष्ट अतिथि उपखण्ड अधिकारी नारायणसिंह चारण थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से किया गया। पश्चात् खानपुर रामगंजमंडी आदि के पाठशालाओं के बच्चों ने धार्मिक प्रस्तुती दी। आचार्यश्री के जीवन चारित्र पर श्री अमरकुमार जैन प्रोफेसर रामगंजमंडी ने अपने उद्‌गार प्रस्तुत किये। पश्चात् पथरिया दिल्ली आदि बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। अन्त में परम पूज्य मुनिवर श्री आर्जवसागरजी ने विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा है कि शिष्य बांस के समान होता है जब उसे गुरु का सान्निध्य मिल जाता है तो उसे वे बांसुरी बना देते हैं। जिस शिष्य पर गुरु की कृपा हो जाती है उसका मोक्षमार्ग प्रशस्त हो जाता है जीवन सफल हो जाता है। आज वर्तमान में मानव तो बढ़ रहे हैं लेकिन मानवता घटती जा रही है। मुनिश्री ने कहा कि 40 वर्ष पूर्व राजस्थान की वसुन्धरा नसीराबाद (अजमेर) में आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने मुनिश्री विद्यासागरजी को आचार्य पद से सुशोभित किया ओर स्वयं नीचे उतरकर सामान्य मुनि के समान उन्हें नमोस्तु करके निवेदन किया कि "मैं सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण धारण करना चाहता हूँ मुझे अनुग्रहीत करें"। यह पहली घटना जब किसी आचार्य ने समाधिमरण संकल्प लेने से पूर्व अपने शिष्य को आचार्य पद दिया। उस समय यह दृश्य को देखकर सभी की आंखों आसुओं से भर गईं। आचार्यश्री ने अहिंसा का शंखनाद पूरे भारत में किया है। आज आचार्यश्री के हजारों शिष्य-शिष्यायें भारत के कोने-कोने में जैन धर्म की प्रभावना करके जिओ और जीने दो का पावन संदेश दे रहे हैं। सभी यह पावन उपदेश सुनकर प्रसन्न चित्त हो गये और पुन: शीतकालीन प्रवास हेतु कमेटी के लोगों ने निवेदन किया। इस प्रकार यह 40 वां आचार्य पदारोहण दिवस समारोह सानंद सम्पन्न हुआ। पश्चात् कुछ दिन के प्रवास के बाद वहाँ से गुरुवर का विहार झालरापाटन की ओर हो गया। झालरापाटन में प्राचीन मंदिर का दर्शन किया। पश्चात् मंगल प्रवचन हुआ और आहारचर्या भी वहीं पर हुई। तदुपरान्त झालरावाड़ रोड और संधारा से होते हुए दिनांक 21.11.11 को गुरुवर अतिशय क्षेत्र कैथुली पर पहुँचे।

प्राचीन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन कर आहार चर्या वहीं पर सम्पन्न हुई। पश्चात् चेचर, बड़ोदिया, रावत भाटा, श्रीपुरा, बोराव, सिंगोनियाँ आदि गाँव से होते हुए गुरुवर का ससंघ बिजोलियाँ क्षेत्र पर मंगल प्रवेश हुआ। कुछ दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर सलावाटिया, आरोली, टुक्रैई, कोटोन्दा, पारसोली आदि से होते हुए चित्तौड़गढ़ में मंगल प्रवेश किया। यह विहार रामगंजमंडी वालों ने करवाया। चित्तौड़गढ़ में कुछ दिनों का प्रवास रहा।

प्रतिदिन मंगल प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की और एक दिन शास्त्री नगर होते हुए चित्तौगढ़ में किला पर स्थित जिनालय दर्शन हेतु गुरुवर ससंघ एवं समाज के लोगों के साथ किले पर पहुँचे। विश्व प्रसिद्ध कीर्तिस्तम्भ का दर्शन किया। जिस पर दिगम्बर मुद्रा में श्री आदिनाथ भगवान एवं 1008 प्रतिमायें उकेरी हुई थीं। उसके पास ही बने श्री मल्लिनाथ भगवान दिगम्बर जैन मन्दिर जो कि बहुत प्राचीन कलाओं से निर्मित किला का दर्शन करके मन प्रसन्न हो गया। पश्चात् वहाँ की कमेटी के लोगों द्वारा शीतकालीन प्रवास हेतु नम्र निवेदन करते हुए भी गुरुवर का मंगल विहार भादसोड़ा मंगलवाड़ा, सालेड़ा (अतिशय क्षेत्र) होते हुए भीण्डर नगर में मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ पर समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। प्रतिदिन प्रातः काल सम्यक्ध्यान पर मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में स्वाध्याय एवं शाम को आचार्य भक्ति, आरती एवं पाठशाला के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। करीब एक महीने के वास्तव्य के उपरान्त गुरुवर का मंगल विहार उदयपुर की ओर हो गया।

निरन्तर.......

स्वास्थ्य लाभ के बीज

पॉपकॉर्न जैसे नरम दिखने वाले पौष्टिक पदार्थों से भरपूर इस सफेद गोले को हम लोटस सीड के अलावा **फूल मखाना** भी कहते हैं। घी या तेल में हल्के भूनने पर यह बड़ों के साथ ही बच्चों को भी खूब भाता है। इसे ग्रेवी डिशों और मीठे पकवानों में भी तवज्जो दी जाती है। इसके कुछ उपयोगी टिप्स इस प्रकार हैं–

- फूल मखाने में मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट शरीर के किसी भाग में आई सूजन को कम करने में सहायक है। यही नहीं ये शरीर में बनने वाले नुकसानदेह तत्त्वों (फ्रीरेडिकल्स) के कारण होने वाली स्वास्थ्य समस्या को भी दूर करते हैं।
- फाइबर से भरपूर मखाना कब्ज दूर करने में सहायक है। इस प्रकार यह शरीर में मौजूद विषैले तत्त्वों को बाहर निकालने में मददगार है।
- आसानी से पचने के कारण इन्हें बच्चों और बुजुर्गों को भी दिया जा सकता है। यदि बच्चा बहुत छोटा है तो इन्हें हल्का सा भूनने के बाद छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर दिया जा सकता है।
- पोषक तत्त्वों से भरपूर फूल मखाने में कैलोरीज़ भी काफी कम मात्रा में पाई जाती है, लेकिन इसमें पोषक तत्त्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।
- फूल मखाना शरीर में रक्त की कमी को भी पूरा करने में सहायक होता है। रक्त की कमी (ऐनीमिया) की समस्या से जूझ रहे बच्चों के लिए यह काफी फायदेमंद होते हैं। इतना ही नहीं ये शरीर में ब्लड शुगर के स्तर को कम करने में सहायक है।
- पारंपरिक तौर पर ऐसा माना जाता है कि फूल मखाना शरीर को शीतलता प्रदान करने वाले गुणों से भरपूर होता है। अतीत में इसे अनिद्रा व बैचेनी दूर करने में सहायक माना जाता था। अगर आपका बच्चा अत्यधिक चंचल है तो उसे फूल मखाना खिलाकर देखें।
- इसे पॉपकार्न के विकल्प के साथ ही पुलाव, पुडिंग, दाल, खीर में या इसे ऐसे ही बच्चों को खिलाया जा सकता है।

भारत की पूर्वस्थिति

-श्रीनाथूलालजी जैन शास्त्री

भारत की प्राचीन स्थिति कुछ भिन्न थी। उत्तर भारत और दक्षिण भारत के निवासियों का परस्पर संबंध कम था। भारत का विस्तार अफगानिस्तान से आगे तक विस्तृत था। मगध और नेपाल के नीचे तक समुद्र की खाड़ी फैली हुई थी। राजपूताना में भी समुद्र जल की लहरें विद्यमान थीं। दक्षिण भारत में मलय पर्वत से पश्चिम दक्षिण में स्थल था। वह अब समुद्र में समाया हुआ है। उस समय द्रविड़ और असुर जाति के मूल निवासी समस्त भारत में फैले हुए थे। उनके अवशेष आज भी विलोचिस्तान, सिंधु ओर दक्षिण में चन्द्रहल्ली आदि स्थानों पर उपलब्ध हैं। ये मूल निवासी द्रविड़ सभ्य और धर्मकर्म को पहचानने वाले थे। दक्षिण भारत में तीर्थंकर ऋषभदेव ने अहिंसा संस्कृति का प्रचार किया था। दक्षिण के प्राचीन ग्रंथ थोल्कप्पियम् और सिलप्पदिकारम् महाकाव्य ग्रंथों से वहाँ जैन संस्कृति के अस्तित्व का पता चलता है।

(सं.जै.ई. भाग 3, खंड 1-2)

अभिमत जैन धर्म के संबंध में

1. मेरा सुनिश्चित विश्वास है कि जैनधर्म एक मौलिक दर्शन है, अन्य समस्त धर्मों एवं दर्शनों से वह स्पष्टतया पृथक् एवं सर्वथा स्वतंत्र है और इसी कारण प्राचीन भारत के दार्शनिक विचारों एवं धार्मिक जीवन का अध्ययन करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

डॉ. हर्मन जेकोबी (जे.ए.एक्स.1 पृ-40)

2. हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अहिंसा प्रधान जैन धर्म संभवतया उतना ही अधिक प्राचीन तो है ही जितना कि वैदिक धर्म, यदि और अधिक भी नहीं तो इसमें कोई संदेह नहीं कि यह अहिंसा धर्म वेदों जितना प्राचीन अवश्य है।

कल्चरल हैरिटेज ऑफ इंडिया (भा.1, पृ185)

3. मोहनजोदड़ो से उपलब्ध ध्यानस्थ योगियों की मूर्तियों की प्राप्ति से जैनधर्म की प्राचीनता निर्विवाद सिद्ध होती है। वैदिक युग में व्रात्यों और श्रमण ज्ञानियों की परम्परा का प्रतिनिधित्व भी जैनधर्म ने ही किया। धर्म, दर्शन, संस्कृति और कला की दृष्टि से भारतीय इतिहास में जैनधर्म का विशेष योग रहा है।

बाचस्पति गैरोला (भा.दर्शन, पृ 93)

4. जैनों और उनके धार्मिक साहित्य का जो वर्तमान में उपलब्ध ज्ञान है, उसके बल पर यह सिद्ध करना कठिन नहीं है कि बौद्धधर्म या ब्राह्मण धर्म की शाखा होने की बात तो बहुत दूर रही, जैनधर्म भारतवर्ष का सर्वप्राचीन स्वदेशीय धर्म है।

प्रो. एम.एस.रामास्वामी आयंगर (जै.ग., भा. 16 पृ. 212)

5. जो धर्म अधिक सरल हो उसे ही अपेक्षाकृत अधिक जटिल मत का पूर्वज मानना ही चाहिये और जैनधर्म से अधिक सरल धर्म कौन हो सकता है, चाहे पूजा-पद्धति, क्रियाकांड अथवा नैतिक आचार, किसी भी दृष्टि से देखें।

डॉ. ई.डब्ल्यु. टामस-व मेजर जनरल फलॉग

(जैनिज्म दी ओल्डेस्ट लिविंग रिलीजन पृ.36 पर उद्धत)

6. भारत के महान सन्तों जैसे जैनधर्म के तीर्थंकर ऋषभदेव व भगवान महावीर के उपदेशों को हमें पढ़ना चाहिए। आज इन्हें अपने जीवन में उतारने का सबसे ठीक समय आ पहुँचा है, क्योंकि जैनधर्म का तत्त्वज्ञान अनेकान्त (सापेक्ष पद्धति) पर आधारित है और जैनधर्म का आचार अहिंसा पर प्रतिष्ठापित। जैनधर्म कोई पारम्परिक विचारों, ऐहिक व पारलौकिक मान्यताओं पर अन्धश्रद्धा रखकर चलने वाला सम्प्रदाय नहीं है, वह मूलत: एक विशुद्ध वैज्ञानिक धर्म है। उसका विकास एवं प्रसार वैज्ञानिक ढंग से हुआ है, क्योंकि जैनधर्म का भौतिक विज्ञान और आत्मविद्या का क्रमिक अन्वेषण आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन किया है, जैसे कि पदार्थ विद्या, प्राणी शास्त्र, मनोविज्ञान और काल, गति, स्थिति, आकाश एवं तत्त्वानुसंधान। श्री जगदीश चन्द्र वसु ने वनस्पति में जीवन के अस्तित्व को सिद्ध कर जैन धर्म के पवित्र धर्म शास्त्र भगवतीसूत्र के वनस्पतिकायिक जीवों के चेतनत्व को प्रमाणित किया है।

अनन्तशयनम् आयंगर (भू.पू.अध्यक्ष, लोकसभा)

7. साफ प्रगट है कि भारतवर्ष का अध:पतन जैनधर्म के अहिंसा सिद्धान्त के कारण नहीं हुआ था, बल्कि जब तक भारतवर्ष में जैनधर्म की प्रधानता रही थी, तब तक उसका इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है, और भारतवर्ष के मुख्य ह्रास का कारण आपसी प्रतिस्पर्धामय अनैक्य है, जिसकी नींव शंकराचार्य के समय में रखी गई थी।

रेव.जे.स्टीवेन्सन (जैनमित्र व. 24 अंक 40)

8. जैनधर्म का मूल मंत्र अहिंसा है, और अहिंसावाद एक ऐसा दर्शन है जो आर्यों के उदय के पूर्व से चला आ रहा है।

एस.एन.गोखले (इंडियन थियोसोफिस्ट)

9. सब जीवों के साथ सहानुभूति तथा दया रखना जैनधर्म का प्रधान सिद्धान्त है। 'अहिंसा परमोधर्म:' ही जैन दर्शन का मूल मंत्र है। जैन दर्शन सब मतों के लिये आदर दिखलाता है? जैनधर्म में अन्य धर्मों अथवा मतों के लिये सहिष्णुता पाई जाती है। जैन दार्शनिक का यह मत है कि प्रत्येक पदार्थ को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखने से अनन्त रूप हो सकते हैं। अतएव हमें अपने ज्ञान तथा विचार की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए किसी खास मत को ही बिलकुल सच्चा या झूठा नहीं मान लेना चाहिये। इस प्रकार जैन दर्शन के अनुसार सब धर्म किसी अंश में सत्य हैं।

सॉवलिया बिहारी लाल वर्मा (विश्व धर्म-दर्शन, पटना पृ. 157)

10. हिन्दू धर्म पर इस धर्म का बड़ा प्रभाव पड़ा है। जैनों के चौबीस तीर्थंकरों की भाँति विष्णु के चौबीस अवतार निश्चित कर मूर्तिपूजा प्रचलित करनी पड़ी। जैनों के सात तीर्थों की भांति हिन्दुओं ने भी सात पुरियों की महत्ता कायम की। जैनधर्म के महावाक्य 'अहिंसा परमोधर्म:' को स्वीकार कर इसे वैष्णव धर्म का मूलमंत्र बनाया।

(वही-पृ.231)

11. जैनधर्म के ऋषभदेव से लेकर महावीर तक चौबीस तीर्थंकर हो चुके हैं। तीर्थंकरों का पुर्नजन्म नहीं होता, वे दैवी आभा हो जाते हैं। इस प्रकार महावीर जैनधर्म के संस्थापक नहीं थे, किन्तु जैनधर्म के वर्तमान रूप के संस्थापक एवं प्रवर्तक थे।

(वही-पृ. 131)

12. इतिहास को जानने का दावा करने वालों में से अनेक ऐसे हैं जो यह नहीं जानते कि बुद्ध के जन्म से लाखों वर्ष पूर्व से एक या दो नहीं वरन् अनेक तीर्थंकर अहिंसा धर्म का प्रचार करते चले आये थे। जैनधर्म एक अत्यन्त प्राचीन धर्म है और भारतीय संस्कृति को उसने बहुत कुछ दिया है। जैनधर्म किसी जाति विशेष का धर्म नहीं है वरन् वह तो प्राणी मात्र का धर्म है, अन्तरराष्ट्रीय एवं विश्वधर्म है।

डॉ. कालिदास नाग (अनेकांत वर्ष 10 पृ.224)

13. जिनेन्द्र का धर्म सच्चा धर्म है, यह पृथ्वी पर मानव मात्र का धर्म है।

(रेव.जे.ए. डुबोय)

14. आजकल यज्ञों में पशु हिंसा नहीं होती, ब्राह्मण और हिन्दूधर्म में मांसभक्षण और मदिरापान बन्द हो गया, सो यह भी जैनधर्म का प्रताप है। जैनधर्म की छाप ब्राह्मणधर्म पर पड़ी है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (जैनधर्म का महत्व सूरत, भाग 1, पृ.81)

15. प्रत्येक धर्म की उच्चता इसी बात में है कि उसमें अहिंसा तत्त्व की प्रधानता हो। अहिंसा तत्त्व को यदि किसी ने अधिक से अधिक विकसित किया है तो वह महावीर स्वामी थे। पहले मैं मानता था कि मेरे विरोधी अज्ञान में हैं, आज मैं विरोधियों से प्यार करता हूँ क्योंकि अब मैं अपने विरोधियों की दृष्टि से भी देख सकता हूँ, मेरा अनेकान्तवाद, सत्य और अहिंसा इन युगल सिद्धान्तों का ही परिणाम है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी (महावीर स्मृति ग्रंथ-आगरा भाग 1, पृ.81)

16. सर्वोदय शब्द नया नहीं है, प्राचीन शब्द है, जैन शास्त्रों में आया है। जैनों की सबसे बड़ी देन है, मांसाहार त्याग। इस्लाम ने आक्रमण किया, क्रिश्चियनों ने भी आक्रमण किया, परन्तु जैनधर्म ने किसी पर आक्रमण नहीं किया।

सर्वोदयी नेता संत विनोबा भावे

17. यह बात सुनिश्चित है कि जैनधर्म और बौद्धधर्म न हिन्दू ही थे और न वैदिक, तथापि वे भारतवर्ष में ही उत्पन्न हुए और भारतीय जीवन, संस्कृति एवं दार्शनिक चिन्तन के अभिन्न अंग रहे हैं। वे शत-प्रतिशत भारतीय विचारधारा एवं सभ्यता की उपज हैं किन्तु वे हिन्दू नहीं हैं। अतएव भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना भ्रामक है।

जवाहर लाल नेहरू (डिस्कवरी आफ इंडिया)

18. आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भित्ति पर जो किले मानव समाज ने बनाये हैं और बनाता जा रहा है उनकी सुरक्षा के लिए आध्यात्मिक तत्त्व का सहारा लेना आवश्यक है। भगवान महावीर के जीवन चरित्र और उनकी शिक्षाओं से हमें वे तत्त्व आसानी से मिल सकते हैं।

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

19. भगवान महावीर के संदेश किसी खास कौम या फिरके के लिए नहीं हैं, बल्कि समस्त संसार के लिए हैं।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

20. जैनधर्म ने सिद्ध कर दिया है कि लोक और परलोक के सुख की प्राप्ति अहिंसाव्रत से ही हो सकती है।

डॉ. श्रीप्रकाश

21. जैनाचार्यों की यह वृत्ति अभिनन्दनीय है कि उन्होंने ईश्वरीय आलोक (रेवेलेशन) के नाम पर अपने उपदेशों में ही सत्य का एकाधिकार नहीं बताया। इसके फलस्वरूप उन्होंने साम्प्रदायिकता और धर्मान्धिता जैसे उन दुर्गुणों को दूर कर दिया, जिनके कारण मानव इतिहास भयंकर द्वन्द और रक्तपात के द्वारा कलंकित हुआ है।

डॉ. एम.वी. नियोगी

22. यह सर्वविदित है कि जैनधर्म की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। भगवान महावीर अन्तिम तीर्थंकर थे। उन्होंने श्रमण परम्परा को अपनी तपश्चर्या के द्वारा एक नयी शक्ति प्रदान की जिसको पूर्णतम परम्परा का सम्मान दिगम्बर परम्परा में पाया जाता है। भगवान महावीर से पूर्व 23 तीर्थंकर हो चुके थे- उन्हीं में भगवान ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे जिसके कारण उन्हें आदिनाथ कहा जाता है। ऋषभनाथ के चरित में ये उल्लेख है कि महायोगी भरत ऋषभदेव के शत पुत्रों में जयेष्ठ थे और उन्हीं से यह देश भारत वर्ष कहलाया।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

23. बौद्धधर्म की अपेक्षा जैनधर्म अधिक, बहुत अधिक प्राचीन है, बल्कि यह उतना ही पुराना है जितना वैदिक धर्म। जैन अनुश्रुति के अनुसार मनु चौदह हुए हैं। अन्तिम मनु नाभिराय थे। उन्हीं के पुत्र ऋषभदेव हुए, जिन्होंने अहिंसा और अनेकान्त आदि का प्रवर्तन किया। भरत ऋषभदेव के ही पुत्र थे, जिनके नाम पर हमारे पूरे देश का नाम भारत पड़ा।

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

24. जैनधर्म के सारे संकेतों से स्पष्ट मालूम होता है कि इस धर्म का प्रभाव बेबिलोन से लेकर यूरोप तक सर्वत्र व्याप्त था। ईसापूर्व 7वीं सदी में यूनानी मनीषी पैथागोरस निकले। वह एक जैन साधक थे और जैन सन्यासी भी। इस तरह जैनधर्म संसार के सारे धर्म तथा मानविक आत्मविकास के मूल में है। कहा जा सकता है कि इसी के ऊपर मानव समाज के विकास की प्रतिष्ठा आधिरित है।

डॉ. नीलकंठ दास, भुवनेश्वर

25. जैनियों का निरीश्वरवाद इतना उदार तथा व्यापक है कि हमारे जैसे अजैनी और ईश्वरवादी के लिए वह ईश्वरवाद ही है। कई दृष्टियों से उससे ऊपर उठ जाता है। वेदान्त यदि एकवाद है तो जैन धर्म अनेकान्तवाद है।

डॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा

26. यदि हम भगवान महावीर के बताए हुए मार्ग पर चलें तो संसार की बहुत सारी मौजूदा समस्याएँ हल हो सकती हैं।

डॉ. गोपालस्वरूप पाठक (उपराष्ट्रपति)

27. **बाबू विमलचरण लाल एम.एल.ए. कलकत्ता**- अपनी पुस्तक Historical Gleaning में लिखते हैं-

भारत के इतिहास में जैन धर्म ने जरूरी काम किया है। यह धर्म नि:संदेह बौद्धधर्म से पुराना है। यह भी प्रगट है कि महावीर स्वामी गौतम बुद्ध के समकालीन होते हुए भी पुराने थे। कथाओं के अनुसार जैनियों के सिद्धांत, भारत में बहुत प्राचीन काल से मौजूद थे। ऋषभ नेमि आदि तीर्थंकरों के नाम वैदिक साहित्य में प्रसिद्ध हैं जैन धर्म के पालने वालों को पहले निर्ग्रंथ कहते थे। यह प्रमाणित है कि बौद्ध धर्म की स्थापना के समय में निर्ग्रंथ लोग एक विशाल व प्रभावशाली समूह में थे। उनका क्रियाकांड, तत्त्व ज्ञान व संगठन तब मौजूद था।

28. **सर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्** अपनी पुस्तक 'दी इंडियन फिलोस्फी' में लिखते हैं- जैन पुराणों में ऋषभदेव को जैन धर्म का संस्थापक कहा है। इस बात के प्रमाण मिले हैं कि सन् ई. से 100 वर्ष पहले लोग श्री ऋषभ की पूजा करते थे जो पहले जैन तीर्थंकर हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जैन धर्म श्री वर्द्धमान और श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर से भी पहले फैला हुआ था। यजुर्वेद में ऋषभ, अजित व अरिष्ट नेमि इन तीन तीर्थंकरों के नाम प्रसिद्ध हैं। भागवत् पुराण भी यही कहता है कि ऋषभ ने जैन धर्म स्थापित किया। गत 2300 वर्षों के इतिहास को देखा जावे तो प्रगट होगा कि जैन राजाओं ने सेनापतियों ने मन्त्रियों ने व सेठों ने भारत के प्रसिद्ध राजनैतिक काम किये हैं।

यूनानियों के आक्रमण को रोकने वाले व भारत साम्राज्य को प्रभावशाली बनाने वाले महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य जैन धर्मी थे। उनके पोते प्रसिद्ध अशोक भी अपने पूर्व राज्य काल में जैनी थे। सन् ई. से 150 वर्ष पूर्व कलिंग देश का सम्राट राजा खारवेल जैनी था यह बात उड़ीसा के खंडगिरि, उदयगिरि के शिला लेख से प्रगट है।

दक्षिण व पश्चिम में राज्य करने वाले अनेक वंशों के अनेक राजा जैनी थे। गंगवंश के सर्व राजा जैनी थे। इस वंश ने दूसरी से ग्यारहवीं शताब्दी तक दक्षिण में राज्य किया था। राष्ट्रकूट वशं के प्रसिद्ध राजा अमोघवर्ष जैनी थे। गंगवंशी राजा राचमल के प्रसिद्ध सेनापति चामुण्डराय जैन थे जिन्होंने मैसूर के श्रवणवेलगोला स्थान के पर्वत पर जगत की आश्चर्यकारी 56 फुट ऊँची ध्यानस्थ श्री गोम्मट स्वामी की मूर्ति दशवीं शताब्दी में स्थापित की थी। गुजरात के प्रसिद्ध कुमारपाल राजा जैनी थे। करोड़ों रुपयों से अद्‌भुत कला के आबू पर्वत के जैन मन्दिर निर्माता वस्तुपाल व तेजपाल व विमलपाल प्रसिद्ध सैनिक व राज्य मन्त्री थे। राणा प्रताप को उदयपुर राज्य पुन: संस्थापन कराने में प्रचुर धन की सहायता देने वाले भामाशाह सेठ जैनी थे। जयपुर के प्रसिद्ध दीवान अमरचन्द जिनके कारण जयपुर राज्य में पशु वध बन्द हुआ था, जैन थे। दक्षिण व गुजरात में मांसाहार प्रचार की कमी होने में कारण जैन राजाओं का शासन है। हजारों शिलालेख जैन राजाओं की कीर्ति को स्थापित करते हैं।

(ब्र. शीतलप्रसाद)

29. **प्रो. ह्यान-युन-यान, अध्यक्ष चीन भवन**, विश्वभारती "सबसे पहले जैन तीर्थंकरों द्वारा अहिंसा के सिद्धांत की गंभीर एवं क्रमिक व्याख्या की गई और उसका भली प्रकार तथा विशेष नया प्रचार किया गया और यह भी अधिक महत्व के साथ वर्द्धमान महावीर के द्वारा हुआ"

30. **डॉ. एच.बुड्स एक्सटरडम, हालैंड:** अंतिम तीर्थंकर महावीर विषयक चिंतन हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूलाधार द्वारा किया साधारणतया समग्र भारतीय संस्कृति के संपर्क में लाया है।

31. **प्रो. डॉ. लुई रिनाउड, पेरिस, फ्रांस :** तीर्थंकरों की मान्यता अत्यंत प्राचीन है जैसा कि मथुरा के पुरातत्व

से सिद्ध है।

(रिलीजन्स ऑफ एन्सिएंट इंडिया पृ111-112)

32. **महात्मा शिवव्रत लाल जी वर्मन एम.ए. :** जैनधर्म तो एक अपार समुद्र है जिसमें इन्सानी हमदर्दी की लहरें जोरशोर से उठती हैं।

(जैनधर्म का महत्व सूरत, भाग-1, पृ.1-14)

33. **जार्ज वर्नार्डशा :** जैनधर्म के सिद्धांत हमें अत्यंत प्रिय हैं। मेरी इच्छा है कि मृत्यु के पश्चात् मैं जैन परिवार में जन्म धारण करूँ।

(जैन शासन पृ. 430)

34. **डॉ. जे.जी. बुल्हर, सी.आई.ई., एल.एल.डी. :** जैनधर्म के प्राचीन स्मारकों से भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास की बहुत जरूरी और उत्तम सामग्री प्राप्त होती है। जैन धर्म प्राचीन सामग्री का भरपूर खजाना है।

(भारतवर्ष के प्राचीन जमाने के हालात पृ.307)

35. **प्रो. डा. मेक्समूलर एम.ए., पी.एच.डी. :** जैनधर्म अनंतानंत गुणों का भंडार है, जिसमें बहुत ही उच्चकोटि का तत्त्व-फिलासफी भरा हुआ है। ऐतिहासिक, धार्मिक और साहित्यिक तथा भारत के प्राचीन कथन जानने की इच्छा रखने वाले विद्वानों के लिए जैनधर्म का स्वाध्याय बहुत लाभदायक है।

(एन्सायक्लोपीडिया)

36. **डॉ. चारोंलोटा कौ.ज., संस्कृत प्रोफेसर, बर्लिन यूनिवर्सिटी:** जैनधर्म के सिद्धांतों पर मुझे दृढ़ विश्वास है यदि सब जगह उसका पालन किया जाये तो वह इस धरती को स्वर्ग बना देगा। जहाँ तहाँ शांति और आनंद ही आनंद होगा।

(जैन वीरों का इतिहास और हमारा पतन अन्तिम पृष्ठ)

37. **डॉ. एम.ए.बी. संट :** हाँलाँकि यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुकी है कि महावीर अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर थे। इनसे पहले अन्य तेईस तीर्थंकर हुए जिन्होंने अपने-अपने समय में जैनधर्म का प्रचार किया।

(जैनगजट भा.10., पृ.4)

38. **मि. आर्व जे.ए.डबाई मिशनरी :** नि:संदेह जैनधर्म ही पृथ्वी पर एक सच्चा धर्म है और यही मनुष्य मात्र का आदि धर्म है।

(डिस्क्रिप्शन ऑफ दी केरैक्टर, मैनर्स, एण्ड कस्टम्ज ऑफ दी पीपिल ऑफ इंडिया)

39. **प्रज्ञाचक्षु गोविन्द राम काव्य तीर्थ :** वैशाली के महाराज चेटक थे, जो तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के तीर्थ के जैन साधुओं के भक्त और बड़े पक्के जैनी थे। उन्होंने प्रतिज्ञाकर रखी थी कि अपनी पुत्रियों का विवाह जैनधर्मावलंबियों से ही करूँगा।

40. **आर. देशमुख :** ने 'इंडस सिविलाइजेशन ऋग्वेद एण्ड हिन्दू कल्चर' अपनी पुस्तक में लिखा है- ''जैनों के पहले तीर्थंकर सिंधु घाटी सभ्यता से ही थे। सिंधु जनों के देव नग्न होते थे। जैन लोगों ने उस सभ्यता संस्कृति को बनाये रखा और नग्न तीर्थंकरों की पूजा की।'' उन्होंने भाषा के संबंध में भी लिखा है- ''सिंधु जनों की भाषा प्राकृत और प्राकृत जनसामान्य की भाषा है। जैनों और हिन्दुओं में भारी धार्मिक भेद हैं। जैनों के समस्त प्राचीन

धार्मिक ग्रंथ प्राकृत में हैं। विशेषतया अर्ध मागधी में, जबकि हिन्दुओं के समस्त ग्रंथ संस्कृत में हैं। प्राकृत भाषा का प्रयोग से भी यह सिद्ध होता है कि जैन प्राग्वैदिक है और सिन्धु घाटी से उनका संबंध था।''

41. **डॉ. प्रेमसागर जी :** लिखित 'सिंधुघाटी में ऋषभ युग' शीर्षक शोध लेख में लिखा है। 'समूची सिंधु घाटी', उसमें चाहें मोहनजोदड़ो हो या हडप्पा, ऋषभदेव की थी। उनकी ही पूजा अर्चना होती थी।'

वैदिक आर्यों के भारत आगमन और सप्त सिंधु से आगे बढ़ने से पहले भारत में द्रविड़, नाग आदि मनुष्य जातियां थीं, उस काल की संस्कृति को द्रविड़ संस्कृति कहा जाता है। डॉ. हेरूस, आदि अनेक प्रसिद्ध विद्वानों और पुरातत्वज्ञों ने उस संस्कृति को द्रविड़ तथा अनार्य संस्कृति का अंग माना है। प्रो. एस. श्रीकंठ शास्त्री ने सिंधु सभ्यता की जैनधर्म के साथ समानता बताते हुए लिखा है- 'अपने दिगम्बर धर्म, योगधर्म वृषभ आदि विभिन्न लांछनों को पूजा आदि बातों के कारण प्राचीन सिंधु सभ्यता जैनधर्म के साथ अद्‌भुत सादृश्य रखती है। अत: मूलत: यह अनार्य अथवा कम से कम अवैदिक तो है ही।'

42. **मेजर जनरल जे.सी.आर. फर्लांग:** एम.आर.एस.ई. ने अपने ग्रंथ 'शार्ट स्टडीज आप कम्पेरेटिव रिलिजन' पृ.243 में लिखा है- ''ईसा पूर्व अज्ञात समय से कुछ पश्चिमी उत्तरी व मध्यभारतीय तुरानी, जिनको द्रविड़ कहते हैं, के द्वारा शासित था। द्रविड़ श्रमण धर्म के अनुयायी थे। श्रमण धर्म जिसका उपदेश ऋषभ देव ने किया था, वैदिकों ने उन्हें जैनों का प्रथम तीर्थंकर माना है। मनु ने द्रविड़ों को व्रात्य कहा है, क्योंकि वे जैन धर्मोनुयायी थे।''

43. **श्री नीलकंठ शास्त्री** ने 'उड़ीसा में जैनधर्म' पृ.3 अपनी पुस्तक में जैनधर्म को संसार का मूलधर्म बताते हुए द्रविड़ों को जैनों से संबद्ध किया है। वे लिखते हैं कि- ''जैनधर्म संसार का मूल अध्यात्मधर्म है। इस देश में **वैदिक धर्म आने से बहुत** पहले से ही यहां जैनधर्म प्रचलित था। संभव है कि **प्राग्वैदिकों में** शायद द्रविड़ों में यह धर्म था।''

44. **लोकमान्य बालगंगाधर तिलक :** ग्रंथों तथा सामाजिक व्याख्यानों से जाना जाता है कि जैनधर्म अनादि है। यह विषय निर्विवाद है तथा मतभेद से रहित है पुनश्च इस विषय में इतिहास के सुदृढ़ सबूत हैं।

(अहिंसा वाणी जुलाई 92, पृ. 197-98)

45. **फ्रेंच विद्वान ए. गिरिनार :** जैन और बौद्ध धर्म की प्राचीनता के संबंध में मुलाकात करने पर जैनधर्म वास्तव में बहुत प्राचीन है। मानव समाज की उन्नति के लिए जैनधर्म में सदाचार का बड़ा मूल्य है। संसार में प्राय: यह बात प्रचलित है कि भगवान बुद्ध ने आज से 2500 वर्ष पहले अहिंसा सिद्धांत का प्रचार किया था। किसी इतिहास के ज्ञानी को इसका बिलकुल ज्ञान नहीं कि महात्मा बुद्ध से करोड़ों वर्ष पूर्व एक नहीं अनेक तीर्थंकरों ने अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। प्राचीन क्षेत्र और शिलालेख इस बात को प्रमाणित करते हैं कि जैनधर्म प्राचीन धर्म है, जिसने भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ दिया।

(जैनधर्म पृ.12)

46. **डॉ. कालीदास नाग, वाइस चांसलर (कलकत्ता यूनिवर्सिटी) :** जैनधर्म किसी खास जाति का संप्रदाय का धर्म नहीं है, बल्कि यह अंतर्राष्ट्रीय सार्वभौमिक तथा लोकप्रिय धर्म है। आज के संसार में सबका

यही मत है कि अहिंसा सिद्धांत का महात्मा बुद्ध ने आज से 2500 वर्ष पहले प्रचार किया। किसी इतिहास के जानने वाले को इस बात का बिलकुल ज्ञान नहीं है कि महात्मा बुद्ध से करोड़ों वर्ष पहले एक नहीं, बल्कि अनेक तीर्थंकरों ने इस अहिंसा सिद्धांत का प्रचार किया है जैनधर्म बुद्धधर्म से करोड़ों वर्ष पहले का है। मैंने प्राचीन जैन क्षेत्रों और शिलालेखों के स्लाइड्स तैयार करके इस बात को प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि जैनधर्म प्राचीन धर्म है। जिसने भारत संस्कृति को बहुत कुछ दिया परन्तु अभी तक संसार की दृष्टि में जैनधर्म को महत्व नहीं दिया गया। उनके विचारों में यह केवल बीस लाख आदमियों का एक छोटा सा धर्म है हाँलाकि जैन धर्म एक विशाल धर्म है और अहिंसा पर तो जैनों को पूर्ण अधिकार प्राप्त है।

(अनेकांत वर्ष 10, पृ.224)

47. **मुख्योपाध्याय श्री वरदाकांत एम.ए. :** जैनधर्म भगवान महावीर से बहुत पहले दिगम्बर ऋषि ऋषभदेव ने स्थापित किया था।

(जैनधर्म के संस्थापक श्री ऋषभदेव खंड 3)

48. **प्रसिद्ध विद्वान डॉ.ए.एन. उपाध्ये कहते हैं :** जैनधर्म के साथ सांख्य एवं बौद्ध दर्शनों के कुछ बातों में समानता तथा दूसरी ओर इन तीनों की आर्य, वैदिक, बौद्ध धर्म भेदों के साथ समान रूप से कुछ बातों में असमानता और साथ ही जैनधर्म, अजीविक मत, पूरणकश्यप आदि के विचारों में एक प्रकार के सादृश्य को देखकर मैं प्राचीनकाल में एक महान **मागध धर्म** के अस्तित्व में विश्वास करने को विवश हो जाता हूँ। यह मागध धर्म अपने मूलभूत तत्त्वों में विशुद्ध भारतीय था और पूर्वी भारत में गंगा तटवर्ती प्रदेश में, आर्यों के मध्यप्रदेश में प्रविष्ट होने के बहुत पूर्व ही परिपुष्ट हो चुका था। संभवतया ब्राह्मण ग्रंथों के युग के अंतिम पाद में यह दो धारायें एक आर्य और दूसरी देशीय (भारतीय या मागधीय) परस्पर सम्पर्क में आईं। उन दोनों के पारस्परिक संपर्क एवं क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एक ओर तो उपनिषदों का उदय हुआ जिनके द्वारा याज्ञवल्क्य आदि ने सर्वप्रथम आत्मविद्या का प्रचार किया, दूसरी ओर प्राचीन मागधधर्म की महान परम्परा में उसके सतेज प्रतिनिधियों के रूप में तत्कालीन जैनधर्म तथा बौद्धधर्म जनता में प्रचारित याज्ञिक कर्मकांडी वैदिक धर्म के विरोध के क्षेत्र में उतरे।

49. **भिक्खु आनंद कौशल्यायन :** के विचारानुसार उक्त बात पर जो उपाध्ये जी ने जो बल दिया है कि आर्य, वैदिक विचार धारा अवैदिक देशीय विचारधारा से प्रभावित हुई और उसने उससे प्रेरणा प्राप्त की, अत्यंत महत्वपूर्ण है।

50. **महामहोपाध्याय गंगानाथ झा :** का कहना है कि ''निःसंदेह कतिपय सिद्धांतों में जैनदर्शन का बौद्ध, वेदांत, सांख्य, न्याय और वैशेषिक दर्शनों के साथ साम्य है। किन्तु इस बात से जैन दर्शन का स्वतंत्र अस्तित्व उदय और विकास असिद्ध नहीं होता।''

51. **प्रो. जी. सत्यनारायण मूर्ति के शब्दों में :** ''जैनधर्म के कुछ सिद्धांत अपने विशिष्टतया निराले हैं। वे उस पर एक स्वतंत्र स्वाधीन अस्तित्व की छाप छोड़ते हैं।''

52. **प्रो. चिंताहरण चक्रवर्ती :** का कथन है कि- ''यद्यपि अपने वर्तमान ज्ञान के आधार पर हमारे लिए जैन

और ब्राह्मण धर्मों से संबंधित अनेक बातों की आपेक्षिक प्राचीनता निर्णय करना संभव नहीं है तथापि जैनधर्म की यथार्थवादिता एवं उसकी बुद्धिवादिता एक सामान्य दृष्टा का भी ध्यान आकर्षित करने से नहीं चूकती।''

जैनधर्म के वैज्ञानिक सिद्धांतों को देखते हुए उसकी **प्राचीनता वेदों से भी पूर्व की** सिद्ध होती है वेद यद्यपि ऐतिहासिक काल से पहले के हैं। आधुनिक खोज के अनुसार 4000 वर्ष पूर्व के वेद माने जाते हैं। जैनधर्म के इस युग के संस्थापक श्री ऋषभदेव जी वेदों के बनने के बहुत पहले के अवतीर्ण हुए थे।

जैनधर्म में वनस्पति, पृथ्वी, जल, अग्नि आदि में जीवन का होना। अणुवाद सिद्धांत के दर्शन किसी दर्शन में नहीं होते जो कि जैन दर्शन में है। इसी प्रकार शब्द आदि के संबंध में है।

53. **मि.ई. रामस साहब :** अर्ली फेथ ऑफ अशोक' पुस्तक में बतलाते हैं कि ''जैनधर्म अत्यंत सरल होगा वह उसके जटिल धर्म से प्राचीन समझा जाएगा।''

54. **सरदार वल्लभभाई पटेल :** अहिंसा वीर पुरुषों का धर्म है। कायरों का नहीं। जैनों को अभिमान होना चाहिए कि कांग्रेस उनके मुख्य सिद्धांतों का अमल समस्त भारतवासियों से करा रही है।

(अनेकांत वर्ष 6, पृ.39)

55. **आचार्य नरेन्द्र देव :** अगर उनकी (महावीर) शिक्षा संकीर्ण रहती तो जैनधर्म अरब आदि देशों तक न पहुँच पाता।

(ज्ञानोदय वर्ष 1, पृ.82)

56. **श्री गोविंद वल्लभ पंत :** जैनधर्म देश का बहुत प्राचीन धर्म है। इसके सिद्धांत महान हैं। जैनधर्म के आदर्श बहुत ऊँचे हैं।

(जैन संदेश, आगरा 12-2-1951, पृ.2)

57. **बौद्धभिक्षु धर्मानंद कौशंबी :** भगवान महावीर ने पूरे 12 वर्ष के तप और त्याग के बाद अहिंसा का संदेश दिया। हिंसा का अधिक जोर था। यदि महावीर ने अहिंसा का संदेश नहीं दिया होता तो आज भारत में अहिंसा का नाम न लिया जाता।

(भ. महावीर का अदर्श जीवन पृ.12)

58. **विश्वकवि साहित्य सम्राट रवीन्द्रनाथ टैगोर :** ने लिखा है कि ''महावीर ने भारत को ऊँचे स्वर में मोक्ष का संदेश दिया। उन्होंने कहा धर्म एक सामाजिक रूढ़ि नहीं है, किन्तु वास्तविक सत्य है। मोक्ष केवल सांप्रदायिक बाह्य क्रियाकांड से नहीं मिल सकता, प्रत्युत सत्य धर्म के स्वरूप का आश्रय लेने से प्राप्त होता है। धर्म के अंतर्गत मनुष्य और मनुष्य के बीच रहने वाला भेदभाव कभी स्थाई नहीं रह सकता।

59. **जैनधर्म नास्तिक नहीं है :** रा.रा. वासुदेव गोविन्द आपटे, बी.ए.- जैनधर्म ईश्वर की मौजूदगी को स्वीकार करता है। माणिनि ऋषि के सूत्रानुसार-

परलोकोऽस्तीति मतिर्यस्यास्तीति आस्तिकः
परलोको नास्तीति मतिर्यस्यासौ नास्तिकः।
'अस्तिनास्ति दिष्टं मति'

(पाणिनीय व्याकरण 4/4/90)

60. **अनेकांत-स्याद्वाद पर लोकमत :** महामहोपाध्याय डॉ. गंगानाथ झा, वाइस चांसलर प्रयाग विश्वविद्यालय- जब से मैंने शंकराचार्य द्वारा जैन सिद्धांत का खंडन पढ़ा तब से मुझे विश्वास हुआ कि इस सिद्धांत में बहुत कुछ है, जिसे वेदांत के आचार्यों ने नहीं समझा और जो कुछ मैं अब तक जैनधर्म को जान सका हूँ उससे मेरा यह विश्वास हुआ है कि यदि वे (शंकराचार्य) जैनधर्म को उसके असली ग्रंथों से देखने का कष्ट उठाते तो उन्हें जैनधर्म के विरोध करने की कोई बात नहीं मिलती।

61. **आचार्य आनंद शंकर ध्रुव प्रो. वाइस चांसलर हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी :** जैनधर्म में अहिंसातत्त्व जितना रम्य और भक्ति मार्ग जितना स्तुत्य है, उनसे कहीं अधिक सुन्दर स्याद्वाद सिद्धांत हैं।

62. **प्रसिद्ध एडवोकेट डॉ. ए.सी. घोस, देहली :** स्याद्वाद ऐसा बढ़िया सिद्धांत है कि इस में असत्य का पता नहीं लगता।

63. **पाश्चात्य विद्वान सर विलियम हैमिल्टन :** मध्यस्थ विचारों के विशाल मंदिर का आधार जैनों का यह अपेक्षावाद ही है।

64. **डॉ. थामस एम.ए., पी.एच.डी. लाइब्रेरियन इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी :** न्याय शास्त्र में जैन न्याय का स्थान बहुत ऊँचा है। स्याद्वाद का सिद्धांत बहु है। वह वस्तु की भिन्न-भिन्न स्थितियों पर प्रकाश डालता है।

65. **हिन्दी सम्राट् श्री महावीर प्रसाद जी द्विवेदी 'सरस्वती' में लिखते हैं :** प्राचीन ढर्रे के हिन्दू धर्मावलंबी बड़े-बड़े शास्त्री तक अब भी नहीं जानते कि जैनियों का 'स्याद्वाद' किस चिड़िया का नाम है? धन्यवाद है जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैंड के कुछ विद्यानुरागी विशेषज्ञों को, जिन की कृपा से इस धर्म के अनुयायियों के कीर्तिकाल की खोज की गई और भारत वर्ष के लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ। यदि ये विद्वान जैनों के धर्म ग्रंथों की आलोचना न करते, उनके प्राचीन लेखकों की महत्ता प्रकट न करते तो हम लोग शायद आज भी पूर्ववत अज्ञान के अंधकार में ही डूबे रहते।

66. **संस्कृतिज्ञ प्रो. डॉ. हर्मन जेकोबी एम.ए., पीएच.डी. बर्लिन जर्मनी :** जैनधर्म के सिद्धांत प्राचीन भारत वर्ष के तत्त्व ज्ञान और धार्मिक पद्धति का अध्ययन कराने वालों के लिए बड़े महत्व की वस्तु है। इस स्याद्वाद से सर्वसत्य विचारों का द्वार खुल जाता है।

क्रमशः...

आध्यात्मिक ध्यान से कर्मों की निर्जरा होती है।

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

धर्म ध्यान का बड़ा महत्त्व है। ध्यान का दूसरा नाम एकाग्रता है। ध्यान का सम्बन्ध आत्मा से है। ध्यान तो विश्व में सभी के होता है, किन्तु आध्यात्मिक ध्यान तो ज्ञानी साधु-सन्तों के होता है। आध्यात्मिक ध्यान से कर्मों की निर्जरा होती है, यह वीतरागता की ओर ले जाता है। कर्मों की निर्जरा से आत्मा को मोक्ष मिलता है। एक होता है व्यावहारिक ध्यान जो जीवों पर दया व करुणा की ओर ले जाता है। यह प्रशस्त राग ध्यान में आता है जो पुण्य बंध का कारण है। ऐसा आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में बताया। आचार्यश्री ने ध्यान के दो प्रकार बताये क्रियात्मक व निष्क्रियात्मक। यह निष्क्रियात्मक ध्यान अपनी काया व वचन व्यापार को रोकते हुये आत्मा पर मन स्थिर रखकर करना चाहिए। यह ध्यान साधुओं के होता है यह सम्पूर्ण निश्चय की ओर ले जाता है। आचार्यश्री ने यह भी बताया कि ध्यान मात्र एक्शन से नहीं इन्टेशन से होता है। अतः द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से ध्यान होता है। भाव आत्मा को परमात्मा से जोड़ने के लिए होना चाहिए। काल प्रातः मध्याह्न और सायं का होना चाहिए। क्षेत्र शुद्ध, प्रशस्त और एकान्त होनी चाहिए। तथा द्रव्य रूप अपना शरीर पद्मासन, खड्गासन वज्रासन के रूप में सौम्य-मुद्रा के साथ हो और अपना आहार भी शुद्ध होना चाहिए ऐसे उत्कृष्ट अभिप्राय से ही ध्यान की सिद्धि सरलता से हो सकेगी।

साभार: आर्जव-वाणी

गुरु चरण से भक्तों का मन हुआ प्रफुल्लित

परम पूज्य आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ बकस्वाहा में 15 दिन के प्रवास के उपरान्त शीतकालीन प्रवास हेतु बहुत निवेदन करने पर भी गुरुवर का मंगल विहार 13 जनवरी शाम को बाजना की ओर हो गया। 14 जनवरी को प्रात:काल बाजना गाँव में बाजों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। समाज के लोगों ने शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल भेंट किये। प्रतिदिन प्रवचन एवं शाम को गुरुभक्ति व पाठशाला के माध्यम से धर्म की प्रभावना हुई। 17 जनवरी को सुबह बाजना के बाजू में स्थित भीमकुंड का अवलोकन किया और शाम को गुरुवर का मंगल विहार हो गया। 18 जनवरी को रजपुरा पहुँचे। वहाँ पर आहारचर्या सम्पन्न हुयी पश्चात् बरी, बरौदा, होते हुए हटा की ओर विहार हुआ। 19 जनवरी को प्रात: हटा नगरी में बाजों के साथ प्रवेश के समय गढ़ाकोटा से प्रतिष्ठित होकर आयी हुयी मूर्तियों के साथ एवं जनसमूह के जय-जयकारों के साथ गुरुवर का मंगलप्रवेश हुआ। दूसरे दिन यागमण्डल विधान के साथ मूर्तियाँ स्थापित की गयी। गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। पश्चात् 20 जनवरी को हिनोता की ओर विहार हो गया। हिनोता में आहार-चर्या करके शाम को गैसाबाद में बाजों के साथ मंगलप्रवेश हुआ। समाज वालों ने ठहरने हेतु नम्र निवेदन किया लेकिन गुरुवर ने आहारचर्या के उपरान्त विहार कर दिया। सिमरिया होते हुए मोहन्द्रा गाँव पहुँचे। मोहन्द्रा की प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन किये। आहारचर्या के उपरान्त सिंहारन गाँव से होते हुए रीठी में बाजों के साथ मंगलप्रवेश हुआ। गुरुवर के मंगल प्रवचनादि से धर्म की प्रभावना हुई। यहीं पर कटनी की पंचायत कमेटी ने आकर अपने नगर में आने हेतु श्रीफल भेंट किये और 26 जनवरी को वहाँ से कटनी की ओर विहार हुआ। 31 जनवरी शाम को कटनी महानगर में जय-जयकारों के साथ बाजों एवं जनसमूह के बड़े मन्दिर में भव्यमंगल प्रवेश हुआ। 1 फरवरी को आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ सानिध्य में काँच मन्दिर कटनी में बाहुबली भगवान महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। जिसमें गुरुवर के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई एवं गुरुवर के मंगलप्रवचन सम्पन्न हुये तथा 3 फरवरी को भ.आदिनाथ का मोक्षकल्याणक बड़े मन्दिर में मनाया गया। जिसमें आदिनाथ भगवान का मस्तकाभिषेक एवं शान्तिधारा सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् गुरुवर के मंगलप्रवचन एवं निर्वाणलाडू का कार्यक्रम सम्पन्न हुये और पंचायत कमेटी ने गुरुवर को कुछ दिन प्रवास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। प्रतिदिन प्रात: सम्यक्ध्यान पर विशेष प्रवचन एवं दोपहर में जैनागम संस्कार की कक्षा तथा शाम को जीवन संस्कार की कक्षा से अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। 11 तारीख को आचार्य गुरुवर के 5 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस बड़े मन्दिर के विशाल प्रांगण में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। जिसमें मंगलाचरण पूर्वक कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पंचायत कमेटी एवं बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तदुपरान्त भोपाल, दिल्ली, दमोह, जबलपुर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया और गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य दिल्ली वालों ने एवं कटनी के श्रावकगणों ने प्राप्त किया। तत्पश्चात् संगीतमय पृथक्-पृथक् मन्दिर वालों ने सजी हुई द्रव्यों से आनन्द विभोर भक्तिपूर्वक आचार्य गुरुवर की पूजन सम्पन्न हुई। इसी बीच नवीन भाव विज्ञान अंक एवं गुरुवर की पूजन की पुस्तक का विमोचन कमेटी के द्वारा किया गया। तदुपरान्त गुरुवर की अमृतमय वाणी अपार जन समूह को प्राप्त हुई जिसमें गुरु और शिष्य का महत्त्व बताते हुए सब को आनन्दित कर दिया। इस प्रकार संयम लेने के बाद प्रथम बार कटनी आगमन पर समाज, इनकी चर्या एवं प्रवचन, ज्ञानादि

से आकर्षित हुई। कुछ दिन प्रवास के उपरान्त 18 फरवरी को गुरुवर का मंगल विहार शाहनगर की ओर हो गया। शाहनगर में कुछ दिन का प्रवास रहा। वहाँ पर पवई के कमेटी एवं समाज के लोगों ने अपने नगर पधारने हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया और प्रतिदिन आहारचर्या में भी लाभ लेते रहे और कटनी के लोगों ने भी लाभ लिया। शाहनगर की जैन समाज भी गुरुवर की शान्त मुद्रा लखकर प्रभावित हुई। 28 फरवरी को शाहनगर से पवई की ओर विहार हो गया। चौपरा, टिकरिया आदि होते हुए 3 मार्च को पवई नगर में बाजों के साथ भव्य मंगलप्रवेश हुआ। सभीजन गुरुवर के पादप्रक्षालन व आरती करके जय-जयकार लगाते हुए आन्दित हुए और समाज ने फाल्गुन अष्टाह्निका में गुरुवर का मंगल प्रवास की प्राप्ति हेतु श्रीफल भेंट किये। गुरुवर के मंगल प्रवचन का लाभ भी प्राप्त होता रहा है।

अहिंसक हथकरघा वस्त्रों का हमारे जीवन में महत्व.....

-संतशिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

वर्तमान टेक्सटाइल मिलों में बनने वाले कपड़ों में धागे की मजबूती, चमक, मुलायम बनाने हेतु चर्बीयुक्त मटनटेलो का उपयोग धड़ल्ले से किया जा रहा है। ऐसे में विचार करें कि हमारे घरों में प्रतिदिन ऐसे अशुद्ध कपडों से छनने वाला जल कितना अहिंसक एवम शुद्ध है।

आचार्यश्री ने 19 मार्च 2019 को शहपुरा भिटौनी में दोपहर के प्रवचन में अपने उद्बोधन में कहा, आप लोगों ने अपने नगरों में विशाल मन्दिरों में बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं विराजित की हैं लेकिन उनके प्रक्षाल इन हिंसक अशुद्ध वस्त्रों द्वारा किया जाता है। जिनवाणी को बांधने के लिये अछार के वस्त्र भी हिंसक एवम अशुद्ध होते हैं यहां तक की मुनिराजों, आर्यिका माताजी को आहार देते समय जो वस्त्र पहने जाते हैं वे भी हिंसक होते हैं। शरीर के किसी अंग में चोट लगने या घाव होने पर मरहम पट्टी के लिए जालीदार सूती कपड़े की पट्टी की जाती है यदि सिंथेटिक कपड़ों की पट्टी की जाए तो घाव सूखने के स्थान पर बढ़ भी सकता है।

ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा अहिंसक एवम् स्वास्थवर्धक हथकरघा वस्त्रों का ही उपयोग किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में उच्च शिक्षित बेरोजगारों का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि, कम पढ़े युवक भी हथकरघा के माध्यम से 18 से 20 हज़ार रुपये प्रतिमाह कमा रहे हैं।

प्रवचन के अंत मे आचार्यश्री ने पुन: जल छानने, श्रीजी के प्रक्षालन, जिनवाणी के अछार, एवम् चौकों में आहार के समय अहिंसक हथकरघा वस्त्रों के उपयोग करने का निर्देश दिया।

प्रस्तुति: राजेश जैन भिलाई, हथकरघा विशेष प्रवचन सुनने हेतु,
https://www.youtube.com/watch?v=KrCvHgDgj-g&feature=youtu.be

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी.. से **भाव विज्ञान पत्रिका** पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ। मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट:- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

भाव विज्ञान परिवार

❊❊❊❊❊ शिरोमणी संरक्षक ❊❊❊❊❊

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)।

❊❊❊❊ परम संरक्षक ❊❊❊❊

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

❊❊❊ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❊❊❊

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● रामगंजमण्डी : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❊❊ पुण्यार्जक संरक्षक ❊❊

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❊ सम्मानीय संरक्षक ❊

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● जयपुर : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन ● सूरत : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● पथरिया (दमोह) : श्रीमती जैन उषा पदम मलैया।

❊ संरक्षक ❊

● रीवा: श्री जैन विजय अजमेरा ● छतरपुर: श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● दिल्ली : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● हस्तिनापुर (मेरठ): श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● गुड़गांव: श्री संजय जैन, ● गाजियाबाद : श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● कलकत्ता: श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● भोपाल: श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, श्री प्रेमचंद जैन(कुबेर), श्रीमती नीलम राजेन्द्र कुमार जैन (एक्साइज) ● कोटा: श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● गुवाहाटी: श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● पांडीचेरी : श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● सूरत : श्रीमति विमला मनोहर जैन ● जयपुर : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● उदयपुर: श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● इंदौर : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● पथरिया (दमोह): श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल) ● कटनी: श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन।

❊ विशेष सदस्य ❊

● दमोह : श्री मनोज जैन दाल मिल ● अजमेर : श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● सूरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, डॉ. जैन संकेत मेहता ● भोपाल: श्री राजकुमार जैन ● कटनी : श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● पन्ना : श्री महेन्द्र जैन, पवई।

❊ नवागत सदस्य ❊

● **कटनी:** श्रीमती मधुमति सनतकुमार जैन, श्रीमति सविता पवनकुमार जैन, श्री विजयकुमार जैन, श्री शैलेन्द्र जैन शैलु, श्री जैन अजित सिंघई, श्रीमती तारा स्व. अजित जैन, श्रीमती किरन विनय जैन, श्रीमती मनीषा सुकुमाल जैन, श्रीमती शिमला स्व. मुन्नालाल जैन ● **बकस्वाहा (छतरपुर):** श्री भानुकुमार जैन, श्री निखिल राजकुमार जैन (फट्टा) ● **सिमरिया (पन्ना):** श्री सोमचंद जैन ● **दमोह:** डॉ. आशीष जैन, गढ़ाकोटा।

जिनवर- स्तुति

(स्वयम्भू चौबीसी)

रचयिता–आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज

आदिनाथ जिनवर नमूं, कर्म सभी धुल जायँ ।
तब गुण-गण का लाभ हो, समता- दल खिल जायँ॥1॥
दया-धर्म उपदेश यह, जग को दिया हितार्थ ।
धर्म, मोक्ष पुरुषार्थ से, जीवन होता सार्थ ॥ 2॥

•••

अजितनाथ को माथ यह, झुका रहा दिन-रात।
भवोदधि के बीच से, निकाल पकड़ो हाथ ॥ 3॥
विशाल तव प्रभु तीर्थ का, प्रभाव फैला लोक ।
जीते तव दुख तीर्थ ने, आधि-व्याधि सब शोक ॥4॥

•••

संभव जिनवर आपसे, नहीं असंभव कार्य ।
शेष रहे न देश में, अनार्य बनते आर्य ॥ 5॥
समता प्रभुता पायँ सब, तव चरणों दें जाप ।
फूलें फलते योग से, शिव वरते हैं आप ॥ 6॥

•••

अभिनन्दन गुण का करें, गुण का कोश विशाल ।
दर्शन, ज्ञान, चरित्र की, सम्पद् हो खुशहाल ॥ 7॥
सदा- नन्द आतम रहे, नन्दन बन स्वाधीन ।
अभिनन्दन के शुभ चरण, पकड़ूँ हो लवलीन ॥ 8॥

•••

सुमति होय यह मम-मति, तव-सम सुंदर पूर्ण ।
कुमति मिटा दो सन्मति, दे दो प्रभु सम्पूर्ण ॥ 9॥
समवसरण वैभव जहाँ, शोभें आप जिनेन्द्र।
मंगल प्रातिहार्य सह, मुनिगण पूजें इंद ॥ 10॥

•••

पद्मप्रभु हो लाल तुम, पाद गुलाबी रूप।
भवित चकित लख रूप तव, होते प्रभु अनुरूप ॥ 11॥
रंगित नभ तव रंग में, इंद्र-वृंद समुदाय ।
आप-गुणों की गंध में, महक लोक सब जाय ॥ 12॥

•••

सुपार्श्व जिनके पार्श्व में, अनंत-गुण अभिराम ।
आप-चरण में वास हो, मिले निजी आराम ॥ 13॥
शुचि-मय तन मन तब बने, जब आवें तुम पास ।
चेतन पावन भी बने, तव गुण के जब दास ॥ 14॥

•••

चन्द्रप्रभु लख चन्द्रमा, होता लज्जित रोज।
आभा अनुपम आपकी, सहस्त्र सूर्य सम ओज ॥ 15॥
समता पाते आपसे, भविक लोक के नाथ ।
मन पवित्र कर भव्य को, वरो मोक्ष नत माथ ॥ 16॥

•••

पुष्पदंत ने क्षय किया, विधि को सुविधि पाय, ।
देह-राग को छोड़कर, गुणनिधि जग में भाय ॥ 17॥
आप-चरण में बैठकर, साता पाते संत ।
हमें दीजिये शीघ्र ही, शुभ-गुण सभी अनन्त ॥ 18॥

•••

शीतल प्रभु की छाँव में, कल्पतरु का योग ।
विषय-दाह सब शान्त हो, चेतन का हो भोग ॥ 19॥
मोक्षमार्ग से मोक्षसुख, फलता-तव पद भाय।
अतः रात-दिन शरण में, बैठूँ समता आय ॥ 20॥

•••

श्रेय-मार्ग में आपसे, होता जग का क्षेम ।
जीव मात्र पर हो दया, जहाँ जगत् पर प्रेम ॥ 21॥
श्रेष्ठ बनें उपकार से, सर्व मिटे संताप ।
प्रभु श्रेयांस के नाम से, भग जाता अभिशाप ॥ 22॥

•••

वासुपूज्य जग पूज्य हो, तव सम नहीं सुपूज्य ।
भविजन तुमको पूजते, इक दिन बनते पूज्य ॥ 23॥
पूजा ना संसार में, कभी रुलाती जान ।
झुकता फल से हो लदा, वृक्ष पाय सम्मान ॥ 24॥

•••

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

विमल अमल जिन तुम बने, पाप शत्रु को छोड़ ।
परिषह सह उपसर्ग भी, सहे विषय सुख मोड़।। 25।।
बाल-भक्त को बोध दो, सुविजित बनूँ कषाय ।
विषय-वासना में कभी, परिणति वह न जाय ।। 26।।

•••

अनंत-शक्ति के धाम जिन, गुण की मिले पराग ।
नमूँ पुण्य हो कर्म-क्षय, शुचि आतम में जाग ।। 27।।
आतम-बल उन्नत बने, धर्म-कर्म में नेक ।
ज्ञानभानु का हो उदय, चिर चैतन्य-विवेक ।। 28।।

•••

धर्म-शिरोमणि आप हो, धर्म-तीर्थ के नाथ ।
धर्म तारता कष्ट से, सभी जगह दे साथ ।। 29।।
भवसुख देता मात्र ना, शिवसुख देता पूर्ण ।
तीर्थ, राजपद सम्पदा, अतिशय गुण सम्पूर्ण।। 30।।

•••

परम-शान्ति दाता प्रभु, शांतिनाथ भगवान ।
चक्री-पद तव त्याग से, बढ़ी धर्म की शान।। 31।।
करूँ महा पुरूषार्थ तव-सम, बन जाऊँ नाथ ।
मिले मोक्ष तब तक प्रभो, नहीं छोड़ना साथ ।। 32।।

•••

सदया कुन्थु महान हो, नहीं जगत् से स्वार्थ ।
आत्म-शुद्ध कर शील धर, पाया है परमार्थ।। 33।।
तत्त्व द्रव्य उपदेश दे, सार्थक किया जहान ।
योग ध्यान उपयोग से, बनता लोक महान ।। 34।।

•••

अरहनाथ रत आत्म में, भव सुख तन को भूल ।
नश्वर-जग के भोग सब, बतलाये प्रतिकूल।। 35।।
शाश्वत -सुख ही ध्येय जब-बने मिले जगचूल ।
वहीं परम आनंद वह, दे दो प्रभु भवकूल ।। 36।।

•••

मल्लिनाथ विधि मल्ल को, हरा दिया बन शूर ।
आत्म-ब्रम्ह में लीन हो, शीलवान बन पूर।। 37।।
मंगल-मूरत सौम्य हो, धर्म बनाया मीत ।
पुलकित हो तव पाद में, निशि दिन गाऊँ गीत ।। 38।।

•••

मुनियों के सुन्दर जहाँ, व्रत के धारक श्रेष्ठ ।
शुक्लध्यान शुभ लीन तुम, उत्तम तप में ज्येष्ठ।। 39।।
संयम, व्रत से कर्म का, करूं नाश यह चाह ।
भ्रमण भवों का छोड़ हो, शिवसुख में अवगाह ।। 40।।

•••

नमि-जिन ने मिथ्यात्व तम, नशा दिया अविलंब ।
भविक-जनों को मोक्ष में, होगा कहाँ विलम्ब।। 41।।
नम नम नमि-जिन आपके, पद पंकज विधि धोय ।
तव-ध्यानी बन एक दिन, तव-सदृश भवि होय ।।42।।

•••

नभ में नीले शोभते, फीका नभ का नील ।
लीन नेमि-जिन ध्यान में, डूबे गहरी झील।। 43।।
सलिल शीत हर ताप को, शीतल भरे सुगंध ।
अधिक शीत,पंकज समा, तव-गुण गण-मकरंद ।।44।।

•••

पार्श्व बिठा लो पास जिन, ना हो भक्त उदास ।
पारसमणि हो लोह को, कंचन करना खास।। 45।।
विषय-वासना जंग-सम, होय दोष का नाश।
शिवपद, केवलज्योति का, शाश्वत भरो प्रकाश ।।46।।

•••

वीर-प्रभु तुम क्षीर-सम, धवल-गुणों के धाम ।
आप-ध्यान से आत्म में, भवि पाते आराम।। 47।।
धर्म-अहिंसा नाद से, हिंसा का प्राणांत ।
अनेकांत के ज्ञान से, भगा तिमिर एकांत।। 48।।

•••

-प्रशस्ति-

चौबीसी जिनवर नमूं, आदिनाथ से वीर ।
'आर्जव' बन तव ध्यान से, पाऊँ भव का तीर।। 49।।
पवइ-नगर में यह लिखी, जिनवर-स्तुति जान ।
मूल पार्श्व-जिन बस शरण, देवें पद निर्वाण।। 50।।

16-03-2019
फाल्गुन अष्टाह्निका पर्व
पवई- पन्ना (म.प्र.)

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161